RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 24 मई 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका जून 2018

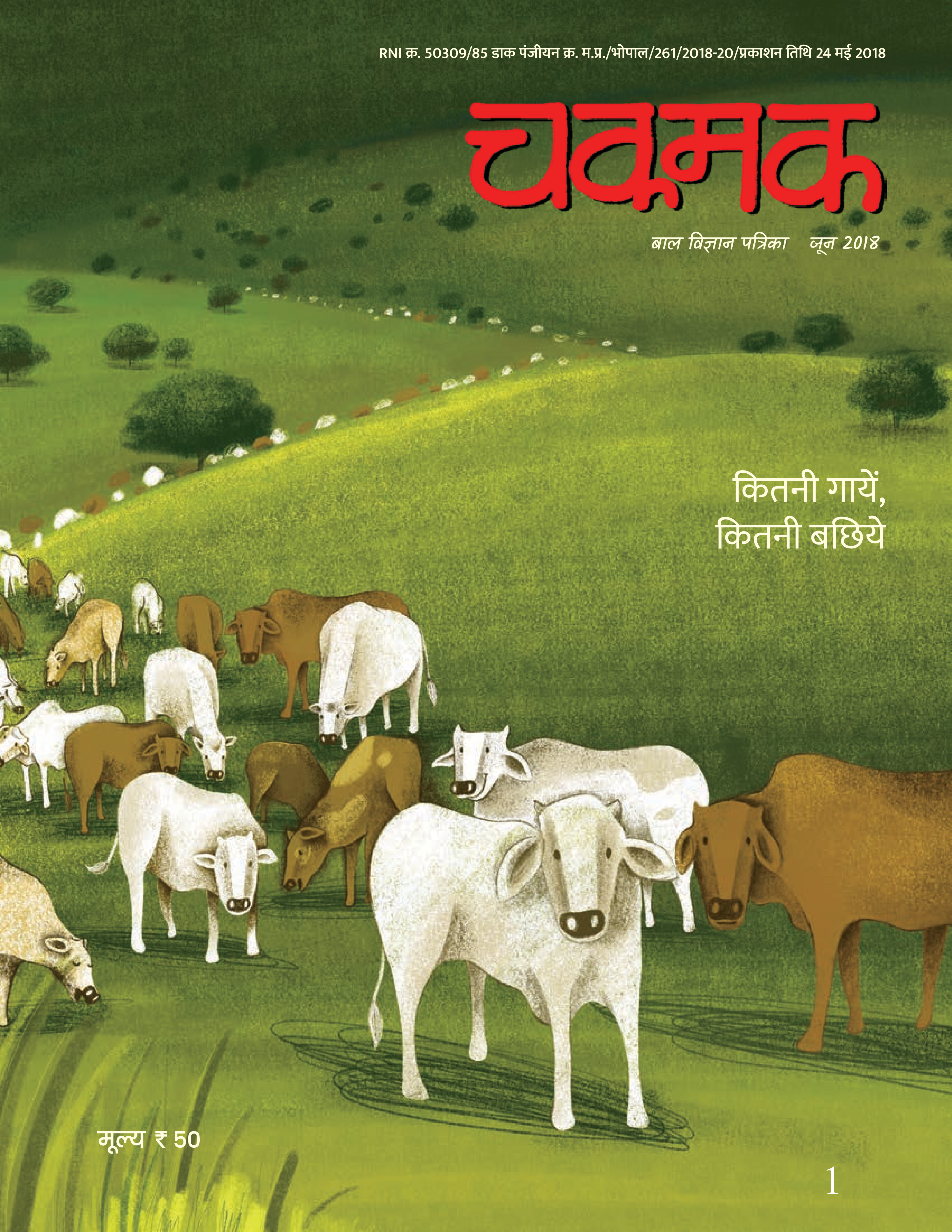

कितनी गायें,
कितनी बछियें

मूल्य ₹ 50

रमज़ान

अधिराज सूद,
पाँचवीं, शिक्षान्तर स्कूल
गुड़गाँव, हरयाणा

खत्म हुआ इन्तज़ार हमारा
आया रमज़ान का महीना प्यारा
मन में आया एक ख्याल
ख्याल में था एक सवाल
रोज़ा क्यों रखते हैं हम
मैंने अब्बू-अम्मी से पूछा हरदम
आता क्यों ईद का त्यौहार
लगता हमें बड़ा मज़ेदार
मोहल्ले में हुई सजावट
बिरयानी और सेवइयाँ की मिली दावत
अब और किसी चीज़ की नहीं है ज़रूरत

आएशा, हिना, शिफा, सानिया और सना

फोटोग्राफ: दवंगरा

पुराने भोपाल में इफ्तार और मस्ती

आएशा और हिना

अंक 381 जून 2018

चकमक

बचपन में एक बार मैं घर से भाग गई थी। लगभग पाँच किलोमीटर भागकर हाँफने के बाद ये समझ आया कि सिर्फ फिल्मों में ही दौड़ते-दौड़ते बड़े होते हैं।

पिंकी: यार तूने इतने छोटे-छोटे बाल क्यों कटवाए?

पप्पू: सैलून वाले के पास तीन रुपए खुल्ले नहीं थे, तो मैंने बोला तीन रुपए के और काट दे!

चित्र : कनक शशि

आवरण चित्र: अंकिता ठाकुर

इस बार

रमज़ान	2
अल-मुकर्रर - कविता तिवारी	4
पास था फेल बताया - मनोहर चमोली 'मनु'	8
चोलितास एस्कैलादोर्रस्	12
गणित है मज़ेदार	14
मेरा पन्ना	15
अँधेरा, रोशनी और परछाई - दवंगरा	17
वो शख्स - कीर्ति	21
सपना - नन्दनी हल्दार	23
सोलर बल्ब	24
तुम भी बनाओ - बातूनी कौआ	25
चौदह टापुओं पर एक राजधानी!- चित्रा विश्वनाथन	27
पंखवाली झोंपड़ी - विनोद कुमार शुक्ल	30
मछली पकाड़िया केकड़ा पकाड़िया - अनूप दत्ता	34
मेरा पन्ना	36
माथापच्ची	39
चित्रपहेली	43
मेरे घर की छत के कांधे - सुशील शुक्ल	44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सम्पादकीय सहयोग
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

अल-मुकर्रर

कविता तिवारी

गर्मियों का मौसम हो और आम का ज़िक्र ना हो, ऐसा भला हो सकता है! मगर सारे आम एक जैसे थोड़े न होते हैं। चूसने वाले देसी आम का मुकाबला तो हो ही नहीं सकता है। इनमें हर पेड़ के आम का स्वाद अलग होता है। और फिर कलमी आमों के क्या कहने! तुमने भी इनकी विभिन्न किस्मों के नाम सुने होंगे जैसे दशहरी, लँगड़ा, चौसा, तोतापरी, हाफ़ूस, बादाम आदि-आदि और इनमें से कइयों का लुत्फ भी उठाया होगा। आम के चाहनेवालों को आम की अलग-अलग किस्में यदि एक ही पेड़ में मिल जाएँ तो इससे बेहतर तोहफा क्या हो सकता है! उत्तर प्रदेश के मलीहाबाद में ऐसा एक पेड़ है जिसमें एक-दो नहीं बल्कि तीन सौ से अधिक किस्म के आम फलते हैं।

लखनऊ के पास बसा मलीहाबाद एक छोटा-सा कस्बा है। महज़ पन्द्रह-बीस हज़ार लोग यहाँ रहते हैं। मगर इस कस्बे का नाम पूरी दुनिया में मशहूर है। यहाँ एक से एक बड़े नामी शायर हुए हैं जिनमें से जोश मलीहाबादी का नाम अव्वल है। वे बड़े

इंकलाबी शायर थे। मगर मलीहाबाद के शायरों से ज़्यादा वहाँ के दशहरी आम प्रसिद्ध हैं। जब भारत और पाकिस्तान की सरकारों के बीच दोस्ताना रिश्ता था तब भारत के राष्ट्रपति की ओर से पाकिस्तानी राष्ट्रपति को मलीहाबादी दशहरी की टोकरियाँ भेजी जाती थीं। 2010 में मलीहाबादी दशहरी को 'भौगोलिक संकेतक' (Geographical Indicator) का दर्जा दिया गया। अब यहाँ के आम उत्पादक अपने आम को मलीहाबादी आम के नाम से बेच सकते हैं और इस नाम से कहीं और के आम नहीं बेचे जा सकते हैं। तो ऐसी जगह तुम्हें एक ही पेड़ से रत्नागिरी का हाफ़ूस, चौसा, बंगनपल्ली, मालदह, बनारस का लँगड़ा आदि मिल जाए तो कितना विचित्र होगा!

एक ही पेड़ पर तीन सौ किस्म के आम दरअसल हाजी कलीम उल्लाह खान साहब की मेहनत का फल है। पद्मश्री व कई अन्य पुरस्कारों से नवाज़े जा चुके कलीम साहब को लोग 'मैंगो मैन' के नाम से भी जानते हैं।

उनके बाग में एक पेड़ तकरीबन सौ बरस पुराना है। इस अजूबे पेड़ का नाम है – अल-मुकर्रर। यह पेड़ इतना विशाल है कि एक फोटो में पूरे पेड़ को उतारना बहुत मुश्किल है। यह महज़ एक पेड़ नहीं बल्कि आमों का एक पूरा बगीचा है। इसकी खासियत यह है कि इस एक पेड़ में तीन सौ से ज़्यादा किस्मों के आम लगते हैं। हरेक की पत्तियाँ अलग, फूल अलग, खुशबू अलग और फल भी अलग। हाँ, यह ज़रूर है कि कोई फल किसी साल फलता है तो कोई अगले साल।

कलीम साहब ने देश के अलग-अलग हिस्सों में फलने वाले लज़ीज़ आमों की कलमें बाँधकर एक ही पेड़ में आमों की इतनी किस्में इकट्ठा की हैं। इनमें से कई किस्में तो उन्होंने खुद तैयार की हैं। चाहे गिलास आम हो या शरबती, हिमसागर, श्याम-सुन्दर, चमकदार लाल हुस्न-ए-आरा या फिर दिल के आकार का असरुर मुकर्रर, हरेक की अपनी एक कहानी है। इस पेड़ में आम की एक किस्म ऐसी भी है जिसमें दो रंग के छिलके होते हैं। इसमें गुठलियाँ भी दो रंग की होती हैं। यही नहीं, अनारकली नाम के इस एक आम में तुम दो तरह के स्वाद का लुत्फ भी उठा सकते हो। पहले-पहल तो तुम्हें इसमें चौसा का स्वाद मिलेगा और बाद में दशहरी जैसा। है ना मज़ेदार! यही नहीं, इसी पेड़ पर एक ऐसा आम भी लगा है जिसका वज़न ढाई किलो होता है। उसे राजा आम का नाम दिया गया है। आम की कई किस्मों को प्रसिद्ध लोगों के नाम भी दिए गए हैं जैसे सचिन, ऐश्वर्या, अब्दुल कलाम आदि...।

कलीम साहब इस पेड़ को जगत पेड़ (यानी पूरी दुनिया का पेड़) कहते हैं। वो कहते हैं कि इस पेड़ के फल हम किसी को बेचते नहीं हैं। जो आता है वो इसके फल ले जाता है।

केवल सातवीं जमात तक पढ़ाई करनेवाले कलीम साहब बताते हैं, "पढ़ने में मेरा मन कभी नहीं लगा। तो मैं हमारे पुश्तैनी कारोबार – आम की बागबानी में लग गया। हमारा परिवार कम से कम तीन सदियों से आम के बगीचे सम्भाल रहा है। सन् सत्तावन में महज़ सत्रह बरस की उम्र में हमने एक पेड़ तैयार किया जिसमें सात किस्म के आम लगते थे। लेकिन सन् साठ में भयानक बारिश हुई और पानी भर जाने की वजह से पेड़ खराब हो गया। जमीन पर लगा पेड़ तो खत्म हो गया लेकिन ज़ेहन में उस पेड़ की जड़ें मौजूद रहीं।"

नई किस्में और कलमी आम तैयार करना आसान काम नहीं हैं। कलीम साहब कहते हैं, "पहले हम फूल को फूल से क्रॉस कराते हैं (ताकि एक का पराग कण दूसरे किस्म के आम के फूल में लगे) फिर फल से बीज निकलता है। यह बहुत ही सब्र का काम है। कई बार फल आने में सालों लग जाते हैं। मेहनत तो सभी में बराबर होती है लेकिन हमेशा अच्छा फल निकले यह ज़रूरी नहीं। हज़ारों में कोई एक फल ही मिसाली होता है, जिसे हम आगे बढ़ाते हैं। यदि फल देखने में अच्छा लगे और खाने में स्वादिष्ट हो तभी हम उसकी कलम बाँधते हैं वरना उसे छोड़ देते हैं और नई किस्में तैयार करने में फिर लग जाते हैं।"

कलीम साहब और अल-मुकर्रर पर लगे दो अलग किस्मों के आम

पेड़ के पनपने के लिए वो कुदरती तौर-तरीकों पर ज़्यादा यकीन रखते हैं। वो कहते हैं कि वे पेड़ों में कीटनाशक का प्रयोग कम से कम करते हैं। कुदरत में यदि पेड़ को नष्ट करने वाले कीड़े हैं तो उन कीड़ों को नष्ट करने की भी व्यवस्था है। बेहद ज़रूरी होने पर ही कीटनाशक का थोड़ा बहुत इस्तेमाल करते हैं। उनके अनुसार कीटनाशक का ज़्यादा इस्तेमाल करना अपने बच्चों को ज़हर देने जैसा है।

कलीम साहब कहते हैं, "मैं अँगूठा छाप ज़रूर हूँ लेकिन इस दुनिया के लिए अपना योगदान देना चाहता हूँ। मेरी ख्वाहिश है कि दुनिया भर में आम की खुशबू व मिठास फैल सके। मैं बंजर ज़मीन में भी आम का बाग लगा सकता हूँ लेकिन मुझे इस बात का डर है कि यह हुनर कहीं मेरे साथ ही कब्र में ना चला जाए।"

तो क्या तुम कलीम साहब से आम की नई किस्म तैयार करना सीखना चाहोगे?

कलम बाँधना

कलम बाँधना या ग्राफ्टिंग वो तरीका है जिसमें दो पौधों को ऐसे जोड़ा जाता है कि एक के ऊपर दूसरा उगने लगता है। बागों में लगे आम के पेड़ कलम बाँधकर ही उगाए जाते हैं। शायद तुमने देखा होगा कि गुठलियों से उगाए पौधे बौराते कम हैं और उनको बौराने में भी कई साल लग जाते हैं। कलम से बढ़े पौधे इनकी तुलना में जल्दी बौराते हैं और इनके फलों की गुणवत्ता और मात्रा भी ज़्यादा होती है।

चित्र- 1 कलम और रूटस्टॉक बराबर की मोटाई के होते हैं

कलम बाँधने के अलग-अलग तरीके हैं। चलो देखते हैं आम की कलम कैसे बाँधी जाती हैं। कलम बाँधने का सबसे अच्छा समय है फूलों के लगने से पहले। जिस पौधे पर कलम बाँधी जाती है, उसे रूटस्टॉक कहते हैं। रूटस्टॉक का तन्दुरुस्त और कम से कम छह महीने की उम्र का होना ज़रूरी है। यानी जब वह पेंसिल जितनी मोटाई का हो जाता है तब उस पर सफलता के साथ कलम बाँधी जा सकती है। इसी तरह से कलम भी एक स्वस्थ पौधे से ली जाती है। कलम दस सेंटीमीटर लम्बाई वाली टहनी होती है जिसके सिरे पर टर्मिनल बड या कली होती है। कलम उतनी ही मोटी होती है जितना कि वह तना जिस पर उसे बाँधा जाएगा (चित्र-1)। कलम काटकर उस पर लगे पत्तों को चाकू से हटा दिया जाता है।

चित्र- 2 रूटस्टॉक के तने में चीरा बनाया जाता है

अब रूटस्टॉक पर जहाँ कलम बाँधना है तीन सेंटीमीटर की गहराई तक बीच में चीरा लगा दिया जाता है (चित्र-2)। फिर चाकू से छीलकर कलम के नीचे वाले सिरे पर दो-तीन सेंटीमीटर लम्बी नोक बना दी जाती है (चित्र-3)। अब इस नोक को रूटस्टॉक के चीरे गए ऊपरी हिस्से में सावधानी से फँसाया जाता है (चित्र-4)। ग्राफ्टिंग टेप या पन्नी के पट्टे से इस जोड़ को अच्छी तरह बाँध दिया जाता है (चित्र-5)। टर्मिनल बड को पन्नी या टेप से नहीं ढका जाता है।

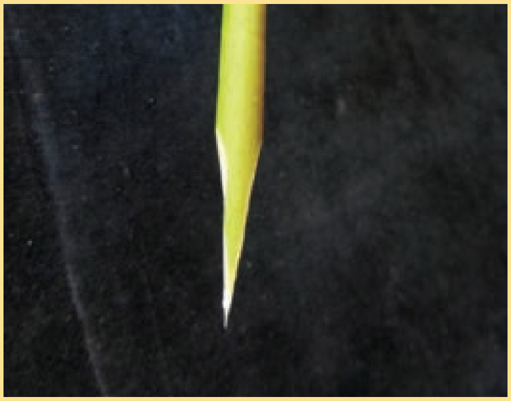

चित्र- 3 कलम के सिरे को छीलकर नोक बनाई जाती है

दो-तीन हफ्तों बाद कलम और तना जुड़ जाते हैं और कलम पर पत्ते फूटने लगते हैं। अब पन्नी या टेप को सावधानी से निकाल दिया जाता है। अगर एक ही पेड़ पर अलग-अलग किस्म के फल चाहिए तो कलम और रूटस्टॉक भी अलग-अलग किस्म या वैराइटी के होने चाहिए। जिस तरह किसी पौधे के तने पर कलम बाँधी जाती है उसी तरह पेड़ की किसी टहनी पर भी बाँधी जाती है।

चित्र- 4 कलम की नोक को रूटस्टॉक के चीरे में फँसाया जाता है

कलम द्वारा नए आम की किस्मों को लगाने का काम सबसे पहले पुर्तगालियों ने गोवा में शुरू किया था। इसी तरह सत्रहवीं सदी में कलम के द्वारा अफोन्सो नामक किस्म बागों में लगाया गया जिसे हम आज हाफूस कहते हैं। अफांसो अल्बकर्क गोवा का पुर्तगाली गवर्नर था जिसका नाम इस नई किस्म को दिया गया था।

चित्र- 5 कलम और तने की जोड़ को पन्नी से बाँध दिया जाता है

उसके बाद खासकर अठारहवीं सदी से भारत के विभिन्न भागों में नवाबों व राजाओं ने आम के बगीचे लगवाए और उनमें नई-नई किस्मों के कलमी आम लगवाने लगे। लखनऊ के नवाब के बगीचे दशहरी गाँव में थे जिसमें दशहरी आम तैयार हुआ। कहते हैं कि इस गाँव में आज भी वह मूल पेड़ है, जिससे दशहरी आम बना था।

चित्र- 6 कुछ हफ्तों बाद कलम और तना जुड़ जाते हैं

“हाँ भई, मनोहर का के, अठारह अट्ठे?” रतन गुरुजी ने मुझसे पूछा। वह हमेशा हम बच्चों के नाम के आगे 'का' और 'के' ज़रूर लगाते थे। यह उनका तकिया कलाम था। मैं अठारह का पहाड़ा आरम्भ से मन ही मन दोहराने लगा। अभी अठारह का पहाड़ा अपनी पाँचवीं मंज़िल तक ही पहुँचा था कि मेरे बाएँ गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ आकर लगा। इस थप्पड़ की गूँज कान की गहराई तक पहुँची - “कऽऽन्न्न्न्न्न्न्नऽऽऽऽ।” मैं अपना सन्तुलन खो बैठा। मैं 'धम्म' से शैलजा के ऊपर जा गिरा। मेरे इस अप्रत्याशित धराशायी होने से शैलजा चीख पड़ी।

“हाँ भई, शैलजा का की, खड़ी हो जा। अब तू बता। उन्नीस पंजे?” रतन गुरुजी ने मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया। अब वे शैलजा से उन्नीस का पहाड़ा पूछने लगे। बस फिर क्या था। क्लास के सभी बच्चे एक के बाद एक खड़े होते रहे। और गुरुजी उन्हें पीटते रहे।

रतन गुरुजी का रंग सांवला था। उनके चेहरे पर चेचक के दाग थे। कद लम्बा, बड़ी-बड़ी आँखें और सिर गंजा था। फिर भी वे सिर पर सरसों का तेल लगाकर आते थे। जब वे धूप में बैठते थे, तो उनका गंजा सिर चमकता था। ऐसा लगता था कि एक सूरज उनके सिर पर जा बैठा है। सर्दी हो या गर्मी, वे ऊनी स्वेटर पहनकर ज़रूर आते थे।

गणित की किताब खोलने से भी मुझे डर लगता था। भिन्न और भाग के सवाल से तो मेरा सिर चकराने लगता था। शैलजा गणित में होशियार थी। बस उसी के सहारे

पास था फेल बताया

मनोहर चमोली 'मनु'
चित्र: शुभम लखेरा

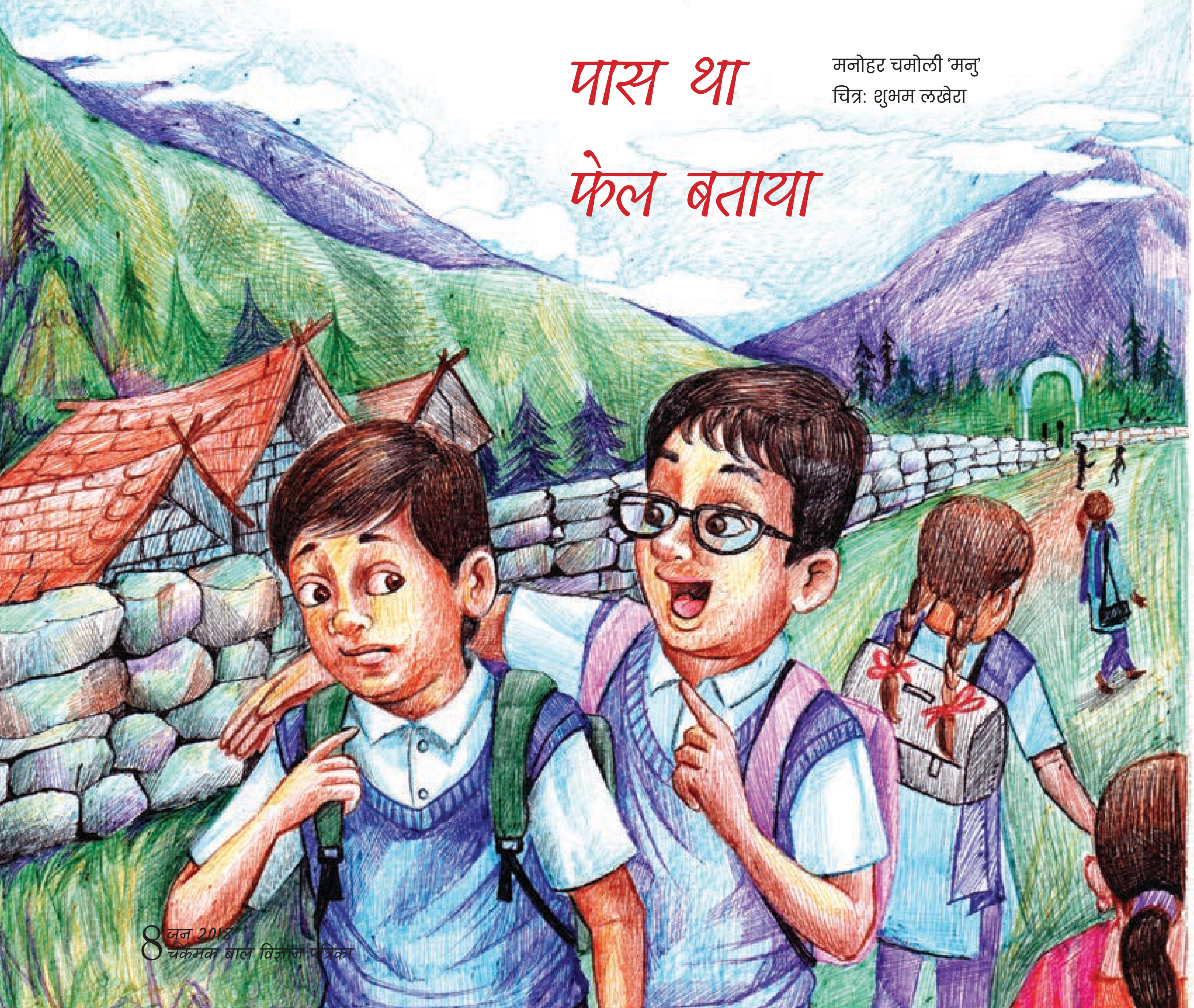

कक्षा चार तक की गणित तो मैंने पार कर ली। हम दरी पर एक के पीछे एक लाइन में पालथी लगाकर बैठते थे। शैलजा मेरे आगे बैठती थी। वह अपनी कॉपी अपने दाएँ घुटने पर रख देती थी। मैं उसकी कॉपी से सवालों के जवाब हूबहू उतार लेता। कक्षा पाँच में आते ही सब कुछ उलटा-पुलटा हो गया। गुरुजी ने लड़कों को लड़कियों से अलग बिठा दिया। मेरे तो आँसू छूटने लगे।

एक दिन गुरुजी ने कहा, "पाँचवीं में बोर्ड की परीक्षा होगी। कॉपियाँ भी बाहर जँचने जाएँगी। मेहनत कर लो। यदि कोई फेल हुआ तो टी. सी. काटकर हाथ में रख दूँगा। याद रखो। फेल हुए तो कहीं और एडमिशन भी नहीं मिलेगा।" हम औसत से नीचे दर्ज़े के छात्र डरते-डरते दिन काट रहे थे। छमाही इम्तिहान हुए। होना क्या था? गणित में पचास में से मेरे तीन नम्बर आए थे। घर में जो पिटाई हुई, सो हुई। स्कूल का घण्टा बजाने वाला लकड़ी का हथौड़ा हमारा इन्तज़ार कर रहा था। उस हथौड़े से फेल होने वालों के सिर पर दो-दो हथौड़े लगे। सिर पर आम की गुठली-सी निकल आई थी। हम साठ-पैंसठ छात्रों में लगभग पन्द्रह छात्र ऐसे थे, जिनके गणित में पाँच से कम नम्बर आए थे।

उन दिनों माहौल ही कुछ ऐसा हुआ करता था। यदि घर में पता चला कि आज स्कूल में फलाँ की पिटाई हुई तो, फलाँ के घर के बड़े-बुजुर्ग भी फलाँ पर हाथ साफ करते थे। उस पर आस-पड़ोस की आण्टी-ताई भी फलाँ की माँजी से आकर कहतीं, "अरे! सुना है तुम्हारे फलाँ की आज स्कूल में पिटाई हुई। क्या हुआ था?" बस फिर क्या होता था? फलाँ अपनी माँ का कितना भी लाडला हो, खूब पिटता। फलाँ की माँजी के हाथों में काँच की चूड़ियाँ तक टूट जाती थीं। आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि स्कूल से पिटने के बाद घर की पिटाई की कल्पना तक करने से दिल कितना घबराता होगा!

रतन गुरुजी ने हम सभी को सारा दिन खड़ा रखा। खड़े-खड़े 'पढ़ना' और 'लिखना' अपने आप में एक दण्ड था। हम में से जिस किसी की पीठ दीवार का सहारा लेती, तो उसकी फिर पिटाई होती। जब ये दण्ड गुरुजी को कम नज़र आता तो वे कक्षा के मॉनिटर हरजीत को पुकारते। कहते, "अरे भई, हरजीत का के, ज़रा गंगाराम को तो ले आ।" हरजीत दौड़कर जाता और पल भर में गंगाराम को ले आता। दरअसल गंगाराम एक बाँस का मोटा लठ था। इस गंगाराम को देखते ही क्लास में हम हूऽऽऽ, हाऽऽऽ हूऽऽऽ हाऽऽऽय करने लग जाते। हमें अपनी दोनों हथेली गंगाराम के आगे करनी होती थीं। गंगाराम चट-चट करता और हथेलियाँ सीऽऽऽसीऽऽऽ।

फिर एक दिन अचानक रतन गुरुजी कक्षा में आए। हाज़िरी रजिस्टर को देखकर गुरुजी ने लगभग आधी कक्षा को खड़ा कर दिया। हाज़िरी रजिस्टर में नज़रें गढ़ाए बोले, "तुम सबको ट्यूशन पढ़ने की ज़रूरत है। अब भी वक्त है। तीन महीने ट्यूशन पढ़ लो। नहीं तो नैया पार होनी मुश्किल है। घर में बता देना। बीस रुपया महीना ट्यूशन फीस है। ये जो बैठे हुए हैं, इनसे पूछ लो। यह शुरू से ट्यूशन पढ़ते हैं। तुम सब सुबह नौ बजे मेरे घर में आ सकते हो। एक-आध घण्टा पढ़ोगे तो भेजे में कुछ घुस जाएगा।" यह सुनकर हम सब हैरान थे। हमारी संख्या चालीस से कम तो नहीं थी। हम अपराधी की तरह कक्षा में खड़े किए गए थे। हमें यकीन ही नहीं हुआ। मैं यह मानने को कतई तैयार नहीं था कि हमारी आधी कक्षा सत्र के आरम्भ से ही गुरुजी के घर जाकर ट्यूशन पढ़ रही है। इंटरवल हुआ। हर कोई दूसरों से इस बात की तसदीक कर रहा था। आखिरकार गुरुजी की बात सही निकली।

'हम ट्यूशन पढ़ते हैं।' यह बात सहपाठियों ने छिपाए क्यों रखी? मैं छुट्टी का घण्टा बजने तक लगातार यही बात सोच रहा था। घर आया तो ट्यूशन की बात माँजी को बताई। माँजी ने पिताजी को बताया। पिताजी ने माँजी से न जाने क्या कहा, कैसे कहा, मुझे नहीं पता। अगली सुबह माँजी ने मुझसे कहा, "तुम चार भाई-बहिन हो। दोनों बड़े भाईयों ने ट्यूशन नहीं पढ़ा। वे अपनी मेहनत से पास हुए हैं। फिर छोटी बहिन भी कहेगी कि वो भी ट्यूशन पढ़ेगी।" ट्यूशन की मनाही को मैं समझ गया था।

स्कूल जाने वाली टोली घटती जा रही थी। कारण साफ था। सहपाठी ट्यूशन के लिए घर से आठ बजे निकलने लगे थे। तीन दिनों के बाद मैं और जगमोहन ही बचे, जो ट्यूशन नहीं पढ़ रहे थे। शेष कक्षा गुरुजी के घर की ओर चल पड़ी थी।

रतन गुरुजी ने कक्षा में पहले हम पर ध्यान देना बन्द किया। हम कक्षा में होते हुए भी नहीं होते थे। मेरे अच्छे दोस्त इस ट्यूशन की वजह से मुझसे दूर हो गए थे। जो कल तक मेरे बिना स्कूल नहीं जाते थे, जो छुट्टी के दिन मेरे साथ खेलते थे, जो दिन में कई बार घर

में आते-जाते थे, सब मानो पीछे छूट गए थे। अचानक जगमोहन जो कभी मेरा दोस्त नहीं था, आज मेरा सबसे अच्छा दोस्त बन गया था। वैसे भी स्कूल कभी रोचक नहीं लगता था। लेकिन अब तो मुझे मेरी कक्षा महज़ चार कोनों का कमरा लगने लगी। एक ओर बोर्ड के इम्तिहान का डर तो दूसरी ओर कक्षा में मेरे अलगाव से मैं परेशान रहने लगा।

अचानक रतन गुरुजी हम दोनों से वह काम लेने लगे, जो हमने कभी नहीं किए थे। सुबह की सभा में विश्राम-सावधान कराना, प्रार्थनाएँ करवाना, बार-बार बोर्ड पर सवाल हल करने के लिए बुलाना, गलती होने पर पिटाई। हमारे सहपाठी बार-बार हमें देखकर हम पर हँसते रहते थे।

मॉनिटर हरजीत ने एक दिन कह ही डाला, "यार तुम दोनों गुरुजी से ट्यूशन क्यों नहीं पढ़ लेते? तुम्हारे चक्करों में मुझे गंगाराम को लेने के लिए बार-बार उठना पड़ता है। एक महीना तो वैसे ही निकल गया। दो महीने ही तो पढ़ना है। क्यों अपना एक साल खराब करने पर तुले हो? पढ़ लो न ट्यूशन।" मॉनिटर की दूरदर्शिता पर मैं हैरान था। क्या ये हरजीत का कथन था? कहीं ऐसा तो नहीं कि ट्यूशन के दौरान रतन गुरुजी ने ऐसा कहा होगा? मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। मुझे लगा कि मैं तो इस साल फेल ही हूँ। जगमोहन ने दाँत पीसते हुए कहा, "चाहे अब कुछ भी हो जाए, ट्यूशन नहीं पढ़ना है। चाहे फेल ही क्यों न होना पड़े।"

अब याद करता हूँ, तो पाता हूँ कि बाकी दो महीनों में समूचे स्कूल में यकीनन हम दोनों की सबसे अधिक पिटाई हुई। बोर्ड के इम्तिहान आ गए। इलाके में दो ही बुनियादी स्कूल थे। दोनों में लगभग दस किलोमीटर का फासला था। बोर्ड से आदेश आया कि दोनों स्कूलों का परीक्षा केन्द्र एक ही होगा। हुआ यह कि हमें इम्तिहान देने दूसरे स्कूल जाना पड़ा। परीक्षा कक्षों में गुरुजनों की ड्यूटी नए तरीके से लगी। हमारे विद्यालय के छात्रों के कक्ष में दूसरे विद्यालय के शिक्षकों की ड्यूटी लगी। हमारे शिक्षक दूसरे विद्यालय के छात्रों के कक्ष में ड्यूटी देते रहे। नया स्कूल, नया माहौल और हमारे लिए अपरिचित शिक्षक। सब कुछ अजीब-सा लग रहा था। तीन-चार पेपर ठीक-ठाक हुए। फिर गणित का पेपर था। पेपर कुछ कठिन था। मैं बार-बार अपने अन्य सहपाठियों को भी देख रहा था। वे भी पेपर की कठिनाई से जूझ रहे थे। शुरू से ट्यूशन पढ़ रहे दो-तीन छात्र तो रोने ही लगे। टीचर ने समझाया। कहा, "पेपर को ध्यान से पढ़ो। बार-बार ध्यान दो कि कक्षा में कैसे सवालों को हल कराया गया था।" मुझे अच्छी तरह से याद है। हर किसी के चेहरे पर अजीब तरह का डर मुझे दिखाई दे रहा था। मानो हमारी उत्तरपुस्तिका की जगह विषैला साँप बैठ गया हो। तीन घण्टे तक पूरा परीक्षा कक्ष भयभीत था। समूची परीक्षा भय से भरे माहौल में बीती।

परीक्षा के बाद हम अपने स्कूल लौटे। रतन गुरुजी ने हमें निशाना बनाते हुए कहा, "पेपर कैसे हुए? गणित में तो हर कोई पास होने से रहा। दस दिन की बात है। परीक्षा का परिणाम आ जाएगा।" मैं और जगमोहन एक-दूसरे को देखते रहे।

हमें नौ दिन गुज़ारने में दिक्कत हुई। नौंवा दिन भी बेहद भारी गुज़रा। रात भर मैं सो नहीं सका। मैं फेल हुआ तो घर नहीं आऊँगा। यदि जगमोहन भी फेल हुआ तो हम दोनों भागकर कहीं और चले जाएँगे। यदि मैं ही फेल हुआ तो मैं कहाँ जाऊँगा? इन सवालों में मेरी नींद उलझ गई।

सुबह उठा। स्कूल जाने का मन कतई नहीं था। जगमोहन की बुझी हुई आवाज़ ने मेरे नाम को पुकारा। मैं सोच रहा था कि मैं घर पर ही रह जाता और मेरा नाम ही जगमोहन के साथ चला जाता, तो कितना अच्छा होता। मगर ऐसा कैसे हो सकता था! पिताजी के साथ-साथ मेरे दोनों बड़े भाई मेरे परीक्षा परिणाम पर आँख गड़ाए हुए थे। मैं और जगमोहन देर से स्कूल पहुँचे। स्कूल का मैदान भरा-सा लग रहा था। कक्षा एक से पाँच तक के सभी छात्र कक्षावार पंक्तियों में खड़े थे। मैं और जगमोहन कक्षा पाँच की पंक्ति में सबसे पीछे जाकर खड़े हो गए। कक्षावार परीक्षा परिणाम सुनाया जा रहा था। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा था।

कक्षा चार का परीक्षा परिणाम सुनाने के लिए शास्त्री गुरुजी सामने आए। वह एक-एक कर छात्रों का नाम पुकारने लगे, "अजीत पास। सोहन पास। दलवीर पास। कमल फेल। कुशलानन्द पास। गुरमीत फेल। राकेश पास। रचना पास। शायरा पास। कुलवीर फेल।" किसी नाम के आगे 'पास' पुकारने पर छात्र तालियाँ बजाते। 'फेल' की घोषणा पर छात्र चुप रहते। छात्र अपनी पंक्ति से निकलकर दौड़ते हुए जा रहे थे। रिर्पोट कार्ड हाथ में

पकड़कर फिर अपनी पंक्ति में लौटकर खड़े हो रहे थे। पास होने वाले छात्रों के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। जो छात्र फेल थे, वे बुझे मन से रिर्पोट कार्ड लेकर सिर झुकाते हुए लौट रहे थे।

अब हमारी कक्षा का परिणाम सुनाया जाने लगा। रतन गुरुजी की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। जगमोहन मेरे आगे खड़ा था। वह बुदबुदाया, “और ट्यूशन न पढ़ने के कारण फेल होने वालों को ठेंगा!” छात्रों को पुकारा जाने लगा। रतन गुरुजी की आवाज़ तेज़ होने लगी। वे जल्दी-जल्दी नाम पुकारने लगे थे। बोले, “राधिका पास। राजेन्द्र पास। जीवनराम पास। ज्योति पास। जगमोहन फेल।” मैंने साफ सुना था। ‘धक-धक’ मेरा दिल जैसे बैठ गया। जगमोहन ठीक मेरे आगे खड़ा था। वह धीमे कदमों से रिर्पोट कार्ड लेने चला गया। जगमोहन के बाद मैं तो बस अपना नाम सुनना चाहता था। जगमोहन के नाम के बाद आठवाँ नम्बर मेरा था। बस अब मेरा नाम पुकारा जाने वाला है। मैं यही सोच रहा था। जगमोहन सिर झुकाए वापिस अपनी जगह पर आ चुका था।

तभी ‘मनोहर फेल’ की पुकार लगी। बस! जैसे सब कुछ यही तो होना था। मैं दौड़ा। दौड़कर जाना तो नहीं चाहता था। पैरों में जैसे दस-दस किलों के जूते पहना दिए गए हों। मेरी आँखें भर आईं। मुझ में रतन गुरुजी की घूरती आँखों में झाँकने का साहस नहीं था। उनके हाथों से रिर्पोट कार्ड लेकर जितनी तेज़ी से मैं दौड़ सकता था, दौड़ा। दौड़कर अपनी जगह पर लौट आया। अभी शेष नाम पुकारे जा रहे थे। जगमोहन ने दायाँ हाथ पीछे किया। वह मेरा रिपोर्ट कार्ड देखना चाहता था। मैंने उसे दाएँ हाथ से अपना रिपोर्ट कार्ड दे दिया। उसी क्षण मैंने उसके बाएँ हाथ से उसका रिपोर्ट कार्ड ले लिया। ये आदान-प्रदान की प्रक्रिया एक साथ हुई। शायद एक ही क्षण में हमने एक साथ एक-दूसरे के रिपोर्ट कार्ड देखे। लेकिन यह क्या! जगमोहन के कार्ड पर तो पास लिखा था। किसी भी विषय में लाल स्याही से गोल घेरा नहीं था।

तभी जगमोहन मेरी ओर मुड़ा। उसने बाँहें फैलाईं और छलकते आँसुओं की परवाह किए हुए बिना बोला, “तू तो पास है रे।” मेरी आँखों के आँसू बह निकले। मेरी आवाज़ भर्रा रही थी। मैंने खुद को सम्भाला। मैं गले का थूक घूँटते हुए बोला, “तू भी तो पास है। देख।” हम दोनों एक-दूसरे से लिपट गए। एक-दूसरे के दिल की धड़कनों का धड़कना हम महसूस कर रहे थे। हम दोनों पास थे।

वो खुशी का क्षण मुझे आज भी याद है। उसके बाद कई परीक्षाएँ दीं। परीक्षा के दिनों में तनाव तो हमेशा ही रहा। लेकिन वो पाँचवी के बोर्ड के इम्तिहान और रतन गुरुजी आज भी याद आते हैं, तो दिल ज़ोरों से धड़कने लगता है।

चोलितास एस्कैलादोरांस्
हा हा !! हा हा!!
चित्र व डिजाईन :
अंकिता ठाकर

कई परतों वाले घने घेर वाले लहँगे, उस पर ऊन का शॉल और सिर पर टोपी। यह पोशाक है बोलीविया के ऐमरा जनजातीय महिलाओं की। ये लोग दक्षिण अमेरिका के बोलीविया देश के ऊँचे बर्फीली पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। सदियों से बहिष्कृत और शोषित इन लोगों को एक समय बस में सवारी करने का भी अधिकार नहीं था और ना ही निजी स्कूलों में जाने का। इन्हें स्पेनिश भाषा में तिरस्कार से चोलिता कहा जाता था, मतलब छोटे लोग।

इतिहास करवट बदलता है और 2005 में इसी समाज के ईवो मोराल्स बोलीविया के पहले आदिवासी राष्ट्रपति बने। उसके बाद ऐमरा लोगों के जीवन में खासा बदलाव आने लगा। बदलाव इसलिए नहीं कि उन्हें बहुत पैसे मिल गए। बदलाव इस तरह कि वे अपना जीवन अपनी तरह से और अपनी शर्तों पर जीने लगे। महिलाओं ने तय किया कि वे हर उस सीमा को लाँघेंगी जो उन पर थोपी गई थी, मगर अपनी पहचान साथ में रखते हुए। वे डॉक्टर, गायिका, शिक्षिका, नर्तकी, खिलाड़ी, उद्योगपति... सब कुछ बनीं मगर अपने पारम्परिक लहँगे और टोपी पहनकर। इन्हीं महिलाओं में से एक हैं हिमेना लिडिआ हुऐलेस्। चलो उनकी कहानी उन्हीं की ज़ुबानी सुनी जाए।

"मेरा नाम हिमेना लिडिआ हुऐलेस् है। मैं एक पर्वतारोही हूँ।"

हम हुएना पोतोसी पर्वत के पास बेस कैम्प में पर्वतारोहियों का खाना बनाने जाते थे। वहाँ खाना बनाते वक्त हमारे मन में यह जानने कि इच्छा होती थी कि आखिर ऊपर चोटी पर कैसा लगता होगा?

दिसम्बर 2015 में हमने सोचा कि पर्वत चढ़ ही लिया जाए। हमने महिलाओं का एक समूह बनाया जिसे हमने 'चोलिता पर्वतारोही' का नाम दिया। इस समूह में 11 चोलिता थे। हमने अपने बूट्स (बर्फ में चलने के लिए खास जूते) और क्रेम्पॉन्स (बर्फीली पहाड़ों पर पैरों की पकड़ बनी रहने के लिए जूतों पर स्टील या एल्युमिनियम के कील) पहन लिए। ला पेज़ में रहने वाले चोलिता के पहनावे में हैट और शाल के साथ ब्रोच और कानों में बालियाँ बहुत महत्व रखते हैं। इसलिए हमने अपनी चोलिता पोशाक नहीं उतारी, हम इसी में चढ़ना चाहते थे।

यहाँ सबका यही कहना था कि "महिलाएँ कैसे पर्वत चढ़ सकती हैं? यह गलत है!" मैंने अपने साथियों को बढ़ावा देते हुए कहा "जैसे आदमी चढ़ते हैं हम भी वैसे ही क्यों नहीं चढ़ सकते?" हमारी निन्दा करने के लिए कोई न कोई हमेशा होता है। अभी भी है। लेकिन हमने उन्हें शब्दों से नहीं अपने काम से गलत साबित किया।

मेरे बच्चे सोचते हैं कि मैं थोड़ी पागल हूँ। वो पूछते हैं "मम्मी, आप इस उम्र में ये कैसे कर सकते हो?" मेरा जवाब होता है कि उम्र कोई बाधा नहीं है। मेरा मानना है कि एक महिला के लिए पर्वत चढ़ने का एहसास सबसे अदभुत है। पर्वत चढ़ते समय हम सबसे आज़ाद महसूस करते हैं।

(https://www.youtube.com/watch?v=hGxxvefRk9A)

अप्रैल 2017 तक चोलिता पर्वतारोही पाँच चोटियाँ चढ़ चुकी हैं- हुएना पोतोसी, अकोतांगो, परिनाता, पोमारापी और इलमानी- बोलीविया का दूसरा सबसे बड़ा पर्वत।

गणित है मज़ेदार!

आज से सात सौ साल पहले उत्तर भारत में गणित के एक महान पण्डित रहते थे। उनका नाम था नारायण पण्डित। नारायण जी को गणित में खासकर जादुई चौकोर से प्रेम था। क्या तुम जानते हो जादुई चौकोर क्या होते हैं?

नीचे दिए चौरस को देखो। इसमें खड़ी लाइन, आड़ी लाइन और तिरछी लाइन में किसी भी तरह से संख्याओं को जोड़ो तो एक ही उत्तर आएगा – 15.

2	7	6	→15
9	5	1	→15
4	3	8	→15
15 ↓	15 ↓	15 ↓	

(तिरछी लाइनें: 15, 15)

अब तुम इस चौकोर को इस तरह पूरा करो ताकि हर तरफ का जोड़ 12 हो।

3		
8		0
	6	5

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि आपको ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

नारायण पण्डित के लिए एक सवाल

नारायण पण्डित जी को ऐसे चौरस बनाने में बड़ा मज़ा आता था। इन पर विचार करके वे तरह-तरह के गणितीय सिद्धान्त खोज निकालते थे। आसपास वालों को ऐसी पहेलियाँ देकर परेशान भी करते थे। एक बार उनका सामना एक ग्वाले से हुआ। वह गाय चराने जाता था और जब बोर होता था तो पहेलियाँ बनाता था। उसने नारायण पण्डित से पूछा-

"पण्डित जी, ये चौरस-वौरस रहने दो। मेरे एक सवाल का जवाब दो। मेरे पास एक गाय है। यह हर साल एक बछिया को जन्म देती है। हर बछिया तीन साल की उम्र के होने पर हर साल एक-एक बछिये को जन्म देती है। तो पण्डित जी झट-से बताइए कि अगर इनमें से कोई न मरे तो बीस साल में मेरे पास कुल कितनी गायें हो जाएँगीं?"

साल	गायें	साल	गायें
1	1	11	
2	2	12	
3	3	13	
4	4	14	
5		15	
6		16	
7		17	595
8	19	18	
9		19	
10		20	

पहले तुम इस तालिका को पूरा करो तो पता चले।

पण्डित जी सोच में पड़ गए। एक-एक साल का हिसाब करके कुछ समय बाद तो उन्होंने जवाब दे दिया। लेकिन झट-से कैसे दें। नारायण जी को कई साल लग गए ऐसा उत्तर खोजने में। जब उसे खोज निकाला तो उन्हें संख्याओं के बारे में एक नया सिद्धान्त मिल गया।

चित्र व डिज़ाइन : अंकिता ठाकुर

मेरा पन्ना

मेरा खरगोश

शिवा धुर्वे,
मुस्कान संस्था, भोपाल

एक दिन मेरे पापा खरगोश लाए थे। मैं खरगोश के साथ खूब खेलता और उसे बहुत प्यार करता था। हर रोज़ उसे गाजर, मूली लाकर खिलाता था। उसकी देखभाल करता। एक दिन घर में कहीं से बड़ा चूहा घुस गया और चीज़ों को कुतरने लगा। मैंने खरगोश को खुला छोड़ दिया और रात को सो गया। तो सुबह उठकर देखा तो बहुत सारे सफेद-सफेद बाल पड़े थे। मुझे शक हुआ कि चूहे ने कहीं खरगोश को खा तो नहीं लिया। मैं जल्दी से खरगोश को ढूँढने लगा लेकिन वह मुझे नहीं मिला। मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने उस चूहे के लिए चूहामार दवाई खरीदी और खाने में डाल दी तो उसे खाकर चूहा झटपट मर गया। मैं अपने खरगोश को बहुत याद करता था। फिर मेरे पापा एक छोटा खरगोश लाए। उसे देखकर मैं बहुत खुश हुआ और उसके साथ खूब खेला। लेकिन इस बार मैंने अपने खरगोश को खुला नहीं छोड़ा। उसके लिए पिंजरा बनाया।

चित्र: गार्गी सिंगने,
तीसरी, सेंट जोसेफ
को-एड स्कूल,
भोपाल, म. प्र.

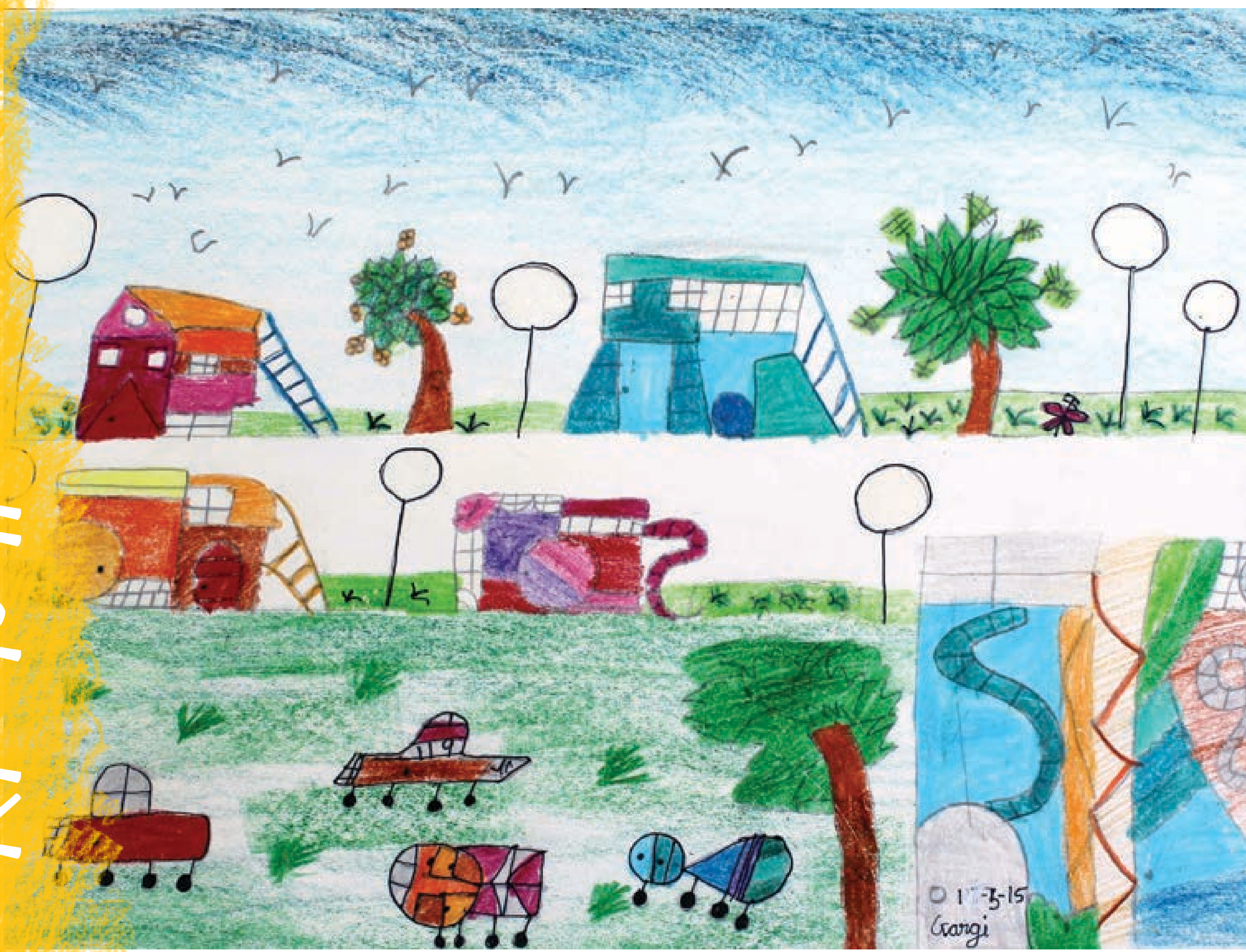

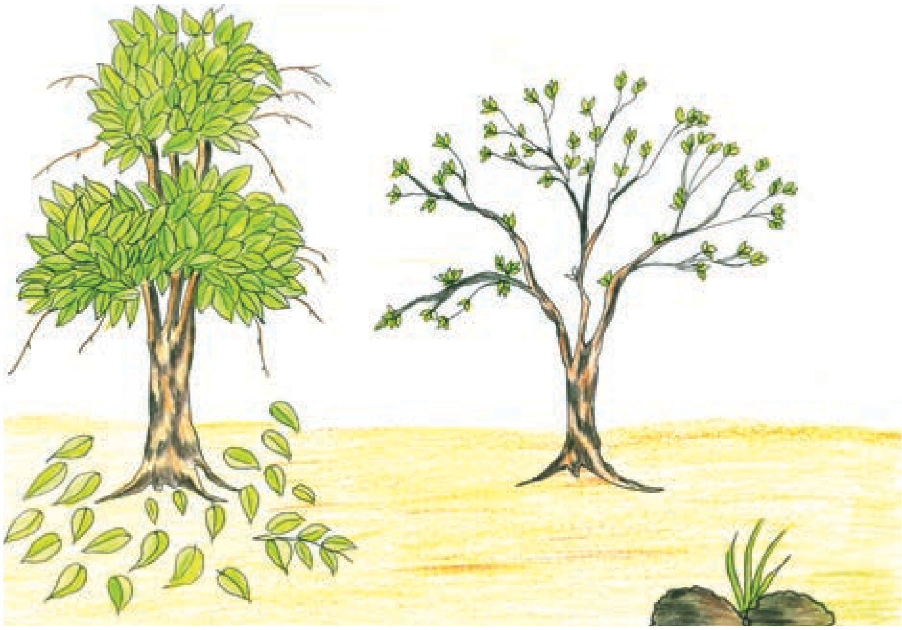

चित्र: सुनन्दिता,
पाँचवीं, डीपीएस
कोयम्बतूर, तमिलनाडु

साँप ने काटा

गुलफाम,
पाँचवीं, रा. प्रा. विद्यालय - 2
सितारगंज, उत्तराखण्ड

एक दिन मैं जब पहाड़ पर था तो मैं और मेरे दादाजी खेल करके आ रहे थे। तो मैं पाँच फुट का एक साँप थैली में डाल रहा था कि साँप ने मेरे हाथ पर काट लिया तो मेरे दादाजी सड़क पर गिए गए। फिर थोड़ी देर में बोले, अरे इसमें तो ज़हर ही नहीं है। तो मैंने बोला कि सबसे ज़्यादा तो आप ही डर गए थे। फिर दादा ने मेरी उँगली पर बेण्डेड लगाई।

चित्र: खेमराज, पाँचवीं, विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर, राजस्थान

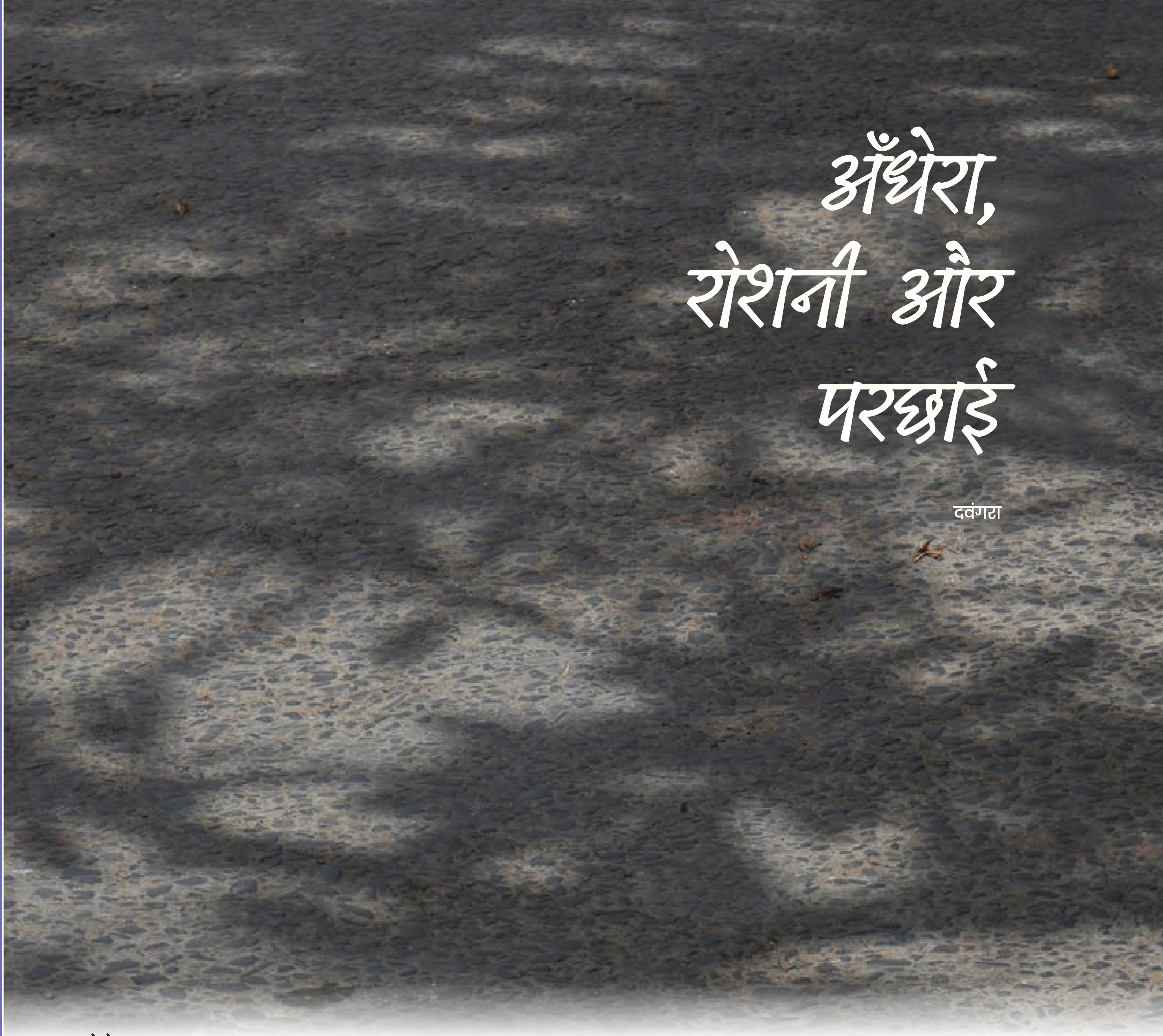

अँधेरा, रोशनी और परछाईं

दवंगरा

फोटोग्राफ: दवंगरा

मेरे लिए किसी दीवार पर, या किसी कोने पर, किसी वस्तु के ऊपर, या किसी पेड़ पर, किसी भी चीज़ पर प्रकाश का गिरना उस वस्तु को एक दूसरी दुनिया का बना देने जैसा है। जैसे कि वो यहाँ पृथ्वी पर नहीं है और वो मुझे कहीं और ले जाती है। फिर रोशनी के साथ परछाई भी साथ चलती है और हर पल नए-नए खेल दिखाती है। कभी तुम भी देखो, किसी भी कोने में अगर लाइट पड़ रही हो और उस लाइट में बाहर पेड़ की पत्तियों की छाया दिख रही हो, तब अकसर बाहर की हवा के साथ पत्तियों की छाया अन्दर लहराती हुई दिखेगी। उन पत्तियों को बाहर पेड़ पर देखने के बजाए तुम उनको उनकी छाया में देख रहे होते हो। यह एक अलग तरीके से देखना हुआ।

कभी तुमने धूल के कणों को लाइट में देखा है? उनके साथ खेला है? वो भी एक अलग दुनिया में ले जाते हैं। उनके अन्दर से हाथ निकालो तो ज़ोर-ज़ोर से नाचने लगेंगे। लाइट कैसे-कैसे खेल दिखाती है हमें! अगर धूप में किसी पेड़ को देखो तो उसकी पत्तियों का रंग चटक हरा चमकता हुआ होगा। वही अगर तुम शाम को कम प्रकाश में देखो तो उसका रंग बदल जाएगा। लाइट के साथ रंग भी खेलता है। मैं अकसर लाइट के साथ खेलती हूँ। लाइट की दुनिया के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?

फोटोग्राफ: दवंगरा

चित्र- 1 दोपहर में पेड़

चित्र- 2 वही पेड़ शाम को

मेरे कमरे में एक खिड़की है जिसमें एक छोटा-सा छेद है। जब धूप उधर से निकलती है तब आँगन पर एक बिन्दु-सा चलने लगता है। जैसे-जैसे धूप वहाँ से गुज़रती है, वो बिन्दु भी अपनी जगह से चलने लगता है। सबसे ज़्यादा सिनेमाई तब लगता है जब किसी अँधेरी जगह पर कहीं दूर से कोई प्रकाश आ रहा हो। वो बहुत थोड़ा-सा प्रकाश भी उस जगह को इतना सुन्दर बना देता है!

कभी अगर तुमने रात को सड़कों पर जो रोड लाइट लगी होती हैं उनकी लाइट देखी हो- कहीं नीली, कहीं लाल तो कहीं पीली लाइट होती है। उनके नीचे से गुज़र रहे लोग जैसे उस लाइट में नहा लिए होते हैं। रोशनी में नहाते लोग कितने अलग और अद्‌भुत दिखते हैं। मेरे लिए लाइट का किसी वस्तु पर पड़ना उस वस्तु को आलौकिक बना देना होता है जिसे हम अंग्रेज़ी में otherworldly कहते हैं।

चित्र- 3 रात को सड़क पर लगी लाइट की रोशनी

फोटोग्राफ: दवंगरा

चित्र- 4 गोल खम्भे पर गिरती सूरज की किरणें और छाया

कभी मौका मिले तो किसी गोल खम्भे पर गिरती हुई सूरज की किरणों को देखना। एक तरफ तेज़ रोशनी और दूसरी तरफ काली परछाई। और बीच में धीरे-धीरे रोशनी का फैलना और अँधेरे का हटना – अँधेरे और रोशनी का एक दूसरे से मेल-जोल। दरअसल चित्र बनाते समय गोलाई दिखाने के लिए इस खेल को बारीकी से देखना बहुत काम आता है।

तुम जब चित्र बनाते हो या जब फोटो खींचते हो तब कभी उसमें लाइट का खेल देखते हो? चित्रों में सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होता है रोशनी का उपयोग। उसी से हमें अलग-अलग रंग दिखते हैं। सपाट कागज़ पर बने चित्रों में उतार-चढ़ाव, गोलाई ये सब हम रोशनी और परछाई के उपयोग से दिखा पाते हैं। काले और सफेद फोटो में रंगों की तरंग और गोलाई को अनुभव करने का मज़ा ही कुछ और है।

पुराणों में सूर्यदेव की दो पत्नियाँ मानी गई हैं – एक का नाम संज्ञा और दूसरे का नाम छाया। कहते हैं कि सूरज के ताप से परेशान संज्ञा अपनी परछाई छाया को अपनी जगह रखकर कहीं चली गई। जहाँ भी प्रकाश होगा वहाँ छाया तो होगी ही। अगर हम किसी वस्तु के एक तरफ प्रकाश डालेंगे उसकी दूसरी तरफ छाया होगी। प्रकाश के साथ जैसे रंग खेल खेलता है यूँही छाया या अँधेरा भी खेल खेलता है। अगर कहीं अँधेरा नहीं होगा तो हमें प्रकाश कैसे दिखेगा? अँधेरे से ही हम प्रकाश को देख पाते हैं। कभी हम प्रकाश और अँधेरे को तुरन्त एक के बाद एक देख सकते हैं। वहीं कहीं और हम दोनों के बीच एक लम्बे मेलजोल -सांझ- को भी देख सकते हैं। तो सूर्यदेव कभी छाया के साथ और कभी संज्ञा के साथ लीला रचते हैं।

चित्र- 5 गूलेर के नैणसुख का बना लघु चित्र, आग तापते गाँव के लोग, अठारहवीं शताब्दी

एक बहुत ही रोचक इटेलियन शब्द है 'Chiaroscuro' (कियारोस्कूरो)। इसका अर्थ होता है प्रकाश और अँधेरा। जब चित्र बनाते हैं तो सभी हिस्सों को बराबर रोशन किया जा सकता है। लेकिन कुछ चित्रकार अपने विषय को मजबूती से पेश करने के लिए कुछ हिस्सों को तेज़ रोशनी में नहलाते हैं और कुछ हिस्सों को घुप्प अँधेरे में रखते हैं। चित्रों में और फोटोग्राफी में chiaroscuro पद्धति का बहुत उपयोग होता है। कई तस्वीरों को सुन्दर और मज़ेदार बनाने के पीछे प्रकाश, अँधेरे और छाया का ही मुख्य खेल होता है।

मैंने जब मोबाइल फोन से फोटोग्राफी शुरू की तब मैंने धूप पर ध्यान देना शुरू किया। उसके बाद मेरी खींची हुई तस्वीरों में धूप कैसे-कैसे खेल दिखाने लग गई! शायद मैंने पहले कभी ऐसे प्रकाश का इतना मज़ा नहीं लिया था। फोटोग्राफी ने मुझे एक नई नज़र दी। मैं रोज़ गौर करने लगी कि घर में कहाँ-कहाँ धूप आ रही है। किसी चीज़ की छाया किस जगह, कैसी गिर रही है। हमारे घर में सीढ़ियों से, खिड़कियों से, रोशनदानों से, और हर उस छोटे-छोटे कोने, जहाँ से प्रकाश आता है। सबसे ज़्यादा पेड़ की छाया, पत्तियों के बीच पड़ने वाला प्रकाश। फिर जब मैंने उनकी तस्वीरें खींचना शुरू किया असली मज़ा तब आना शुरू हुआ।

फोटोग्राफी में सबसे ज़्यादा ब्लैक एण्ड वाइट फोटोग्राफी में chiaroscuro का इस्तेमाल किया जाता है। फोटोग्राफी में प्रकाश और अँधेरे को एकदम बढ़ा दिया जाता है। जिसमें अँधेरा एकदम काला हो जाता है और जहाँ प्रकाश है वो जगह उभरकर दिखती है और दर्शक को आकर्षित करती है।

चित्र 6 - अँधेरा, रोशनी और परछाई

फोटोग्राफ: दवंगरा

वो शख्स

कीर्ति

चित्र: प्रशान्त सोनी

मैंने और मेरे ट्यूशन के दोस्तों ने पिछली ही रात को ही तय कर लिया था कि रविवार को सुबह-सुबह ही गर्मी से छुटकारा पाने के लिए पुष्प विहार के चर्च वाले पार्क पर जाएँगे। गर्मियों की उस सुबह तेज़ हवा और उसके साथ उड़ रहे पेड़ के पत्ते सुकून पहुँचा रहे थे। हम सभी सुबह-सुबह सही समय पर पार्क में मिले और एक बड़े से पेड़ के नीचे कुछ देर के लिए बैठ गए।

अभी हम बैठे ही थे कि मुझे एक बैंच पर घुंघराले बालों वाला एक आदमी दिखा। उसकी लाल-लाल आँखें, उसका गुस्सा दिखा रहीं थीं। उसका गोरा रंग भी उसके गुस्से को उभार रहा था। वो मुझे घूरने लगा। मैं जब से पार्क में आई थी वो तभी से वहाँ बैठा था और शायद तभी से मुझे घूर रहा था। मेरा चेहरा जैसे ही उसकी ओर घूमता, उसकी वो लाल आँखें टकटकी लगाए मेरी ही ओर रहतीं। उसके कानों में वो बालियाँ जो उसके घुंघराले बालों से उलझी हुई थीं, उसकी गहरी लाल आँखें और बड़े-बड़े होंठों ने मुझे डरने पर मजबूर कर दिया था। अब मैंने सोच ही लिया था कि उस ओर देखूँगी ही नहीं। मैंने आँखें बन्द कर लीं और प्रकृति की खूबसूरती का मज़ा लेने लगी। पेड़ के ऊपर रंग-बिरंगी चिड़िया, पार्क की सीमा पर लगी हुई झाड़ियों के फूल, बेशक उन फूलों में खुशबू नहीं थी लेकिन वे अपनी खूबसूरती से किसी के भी मुरझाए हुए मन को खिला सकते हैं। मेरा गुस्सा भी अब प्रकृति की बनावट को देखकर मानो गायब ही हो गया था। मैं आँखें बन्द करके ये सब महसूस ही कर रही थी कि इतने में दूर से कुछ आवाज़ें आईं।

मैंने आँखें खोलीं तो सामने हमारे ही बैच के कुछ लड़के हाथों में बॉल, बैट व रस्सा लिए आ रहे थे। वो सुबह से खेल रहे थे, और थक चुके थे। वे भी हमारे ही पास आकर बैठ गए। तभी भाई ने अपनी उँगली को मुँह पर रखते हुए चुप होने का इशारा किया। मुझे

लगा अरे! अब क्या हुआ तो मैंने भी अपने दाहिने हाथ को घुमाकर पूछा क्या हुआ? तभी प्रिया दी ने उँगली का इशारा मेरे बराबर में किया। जब मैंने गर्दन घुमाकर देखा तो नैनसी सोई हुई थी। सरफराज़ थोड़ा आगे आया और नैनसी के कानों में तेज़ी से कुकड़ूकूँ कहकर चिल्लाया। नैनसी फर्राटे से उठी। उसका वो डर और थोड़ा-थोड़ा गुस्सा उसकी उन मोटी-मोटी आँखों में साफ-साफ दिख रहा था। सरफराज़ ने अपने चुलबुले अन्दाज़ में कहा, "नैनसी रानी, सुबह हो चुकी है उठ जाओ!" नैनसी थोड़ा रुककर बोली, "उठूँ क्यों! मैं सो थोड़ी रही थी। मैं तो...।" "हाँ, हाँ तुम सो थोड़ी रही थीं खुली आँखों से सपने देख रही थीं... वो तो हम ही उल्लू हैं जो तुम्हें सोए हुए देख रहे थे," सरफराज़ नैनसी की बात काटकर बोला।

सरफराज़ की उस चुलबुलाहट से सब हँस दिए तभी भाई ने अपने हाथ की हथेली को सिर पर मारते हुए कहा, "अरे चुप हो जाओ। तुम तो बस यूँही लड़ते-झगड़ते रहा करो। ये सब बातें छोड़ो और बताओ अब खेलें क्या?"

"चलो, चलो भाई आपका मनपसन्द खेल आँख-मिचौली खेलते हैं", जागृति अचानक से बोली। "नहीं, नहीं तुम लोग यहाँ-वहाँ, दूर-दूर भाग जाओगे, कोई भी पकड़ नहीं पाएगा", भैया ने चेहरा समेटते हुए कहा। "तो भाई फिर रस्सा टापते हैं।" सारे लड़कों ने तेज़ी से कहा, "भैया अगर आज हमने रस्सा टापा तो घर अपने पैरों से नहीं जा पाएँगे और हाथ-मुँह टूटेंगे सो अलग। भैया मेरी मम्मी तो दो रुपए भी मुश्किल से देती हैं, हाथ-पैर टूटने पर पट्टी आपको ही करानी होगी।" बस फिर क्या था प्रीति दी ने लड़कों की इस बात पर 'डरपोक, डरपोक' कहकर चिढ़ाना शुरू कर दिया। "डरपोक हम नहीं आप सब हैं," लड़कों की ओर से आवाज़ आई। "अगर तुम डरपोक नहीं होते तो रस्सा टापने को मना नहीं करते।" उन लोगों की ये नोक-झोंक चल ही रही थी कि इतने में विशाल भाई के पीछे से भूरे रंग का कुत्ता भौं-भौं करते हुए भागता हुआ आया। उस कुत्ते को यूँ अचानक से प्रकट होता देखकर वहाँ पसरी पूरी मण्डली उठकर भागने लगी और तितर-बितर हो गई। कोई पटरी पर था तो कोई झाड़ियों में। कोई पेड़ के पीछे था तो कोई बैंच के ऊपर। तभी उस कुत्ते का मालिक 'मोती' पुकारता हुआ आया और उसे गोद में उठाकर ले गया। उस कुत्ते का वो इंसानी नाम सुनकर सभी खुद को रोक नहीं पाए और पेट पकड़कर हँसने लगे।

सपना

नन्दनी हल्दार

चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

यह सपने नहीं जो नींद दिखाती है।
यह तो रात की बुनती माला है
जो तारे बीन-बीन सजाते हैं।

यह सपने भी बड़े अजीब होते हैं।
कभी डर कभी तलब कभी खुशी
सभी पलों की मौजूदगी का
एहसास कर देते हैं।

उन सपनों में भी किसकी चाहत करूँ
जिन्हें मैंने आधी मौत में देखा है।
माँ कहती है सपने सच भी होते हैं।
कभी सुलाते हैं तो कभी खुद सोते हैं।

नन्दनी चौदह साल की है। दसवीं कक्षा में पढ़ती है और सावदा, नई दिल्ली में रहती है। अंकुर संस्था की नियमित रियाज़कर्ता है।

सोलर बल्ब

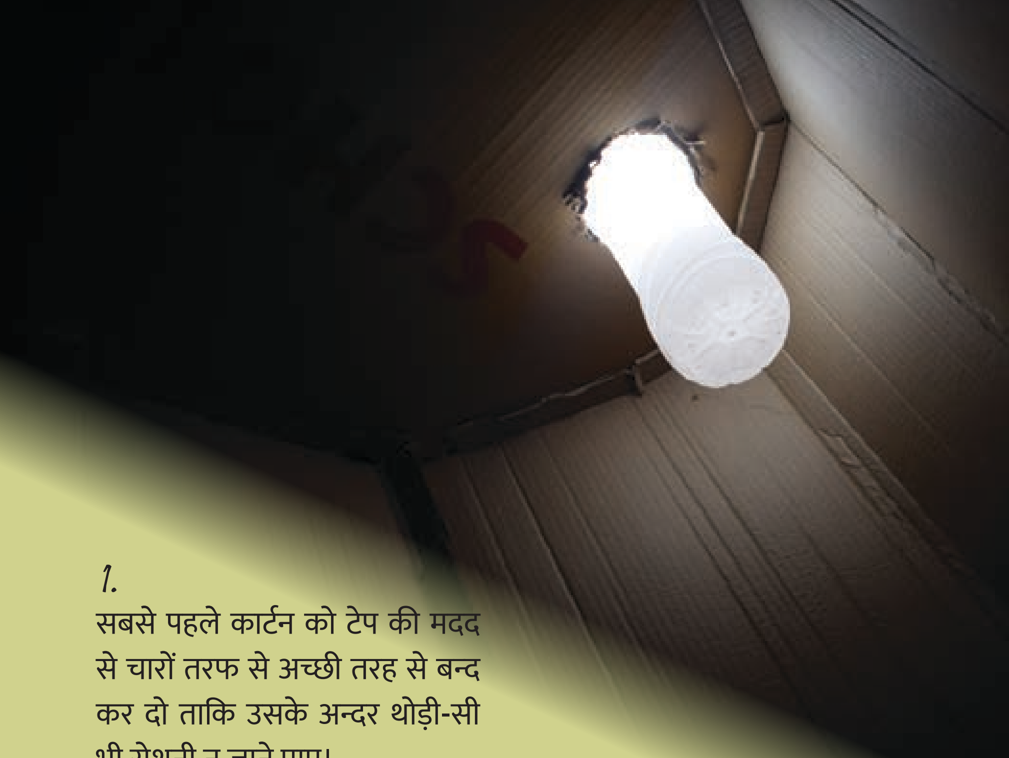

दोस्तो क्या कभी तुमने बल्ब बनाया है? नहीं? तो क्यों न इस बार हम एक सोलर बल्ब बनाएँ? इसके लिए ज़्यादा कुछ सामान नहीं चाहिए - एक कार्टन, प्लास्टिक की बोतल, ब्लीचिंग पाउडर, कैंची, कॉपी जितना बड़ा गत्ते का एक टुकड़ा, टेप और पानी|

1.
सबसे पहले कार्टन को टेप की मदद से चारों तरफ से अच्छी तरह से बन्द कर दो ताकि उसके अन्दर थोड़ी-सी भी रोशनी न जाने पाए।

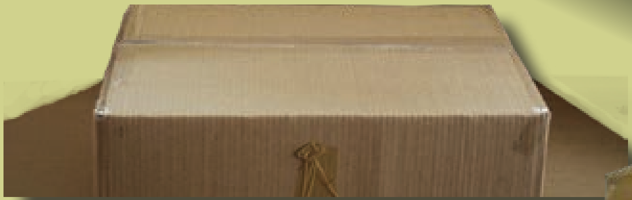

2.
फिर प्लास्टिक की बोतल में एक चुटकी ब्लीचिंग पाउडर डालकर बोतल के मुँह तक पानी भर दो। बोतल के ढक्कन को कसकर बन्द कर दो।

3.
अब गत्ते के टुकड़े में बोतल के बराबर गोल आकार में एक छेद काटो| वह न बोतल के आकार से छोटा हो न ज़्यादा बड़ा। बोतल को छेद में फँसाकर गत्ते से टेप लगाकर ऐसे चिपकाना कि बोतल का एक तिहाई हिस्सा गत्ते के ऊपर हो।

4.
कार्टन में भी बोतल के बराबर एक गोल आकार काट लो।

5.
अब बोतल को कार्टन में बनाए गोल छेद में फिट कर दो।

6.
कार्टन के निचले भाग के किसी एक कोने में छोटा-सा छेद कर दो।

7.
अब इस कार्टन के साथ किसी ऐसे कोने में जाओ जहाँ धूप आती हो और वहाँ जाकर छेद में से अन्दर देखो| क्या हुआ? बत्ती जली? सोचो यह बत्ती कैसे जली।

फोटोग्राफ: दवंगरा

अब इसके साथ तुम जितना खेलना चाहो खेल सकते हो। जैसे बिना धूप के देखो क्या बत्ती जलती है या नहीं! रंगीन बोतल इस्तेमाल करके देखो। या फिर साफ पानी की जगह रंगीन पानी को इस्तेमाल करके देखो। हमें बताना तुमने क्या-क्या देखा।

तुम भी बनाओ

बातूनी कौआ

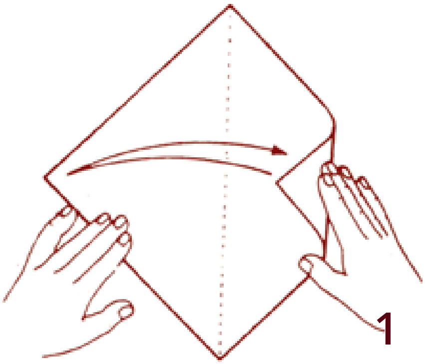

1

एक चौकोर कागज़ को बर्फी जैसे रखकर उसे आधे से मोड़ो (चित्र 1)।

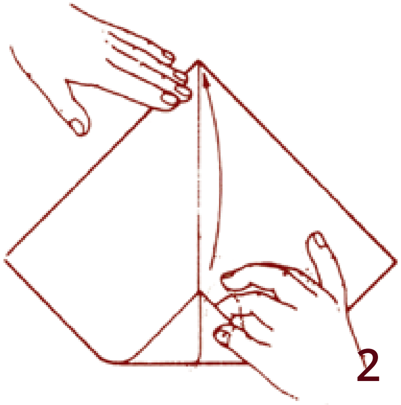

2

अब नीचे से ऊपर तक आधे में मोड़ो (चित्र 2)।

3

तिकोन के बाएँ-दाएँ सिरों को मध्य-रेखा तक मोड़ो (चित्र 3)।

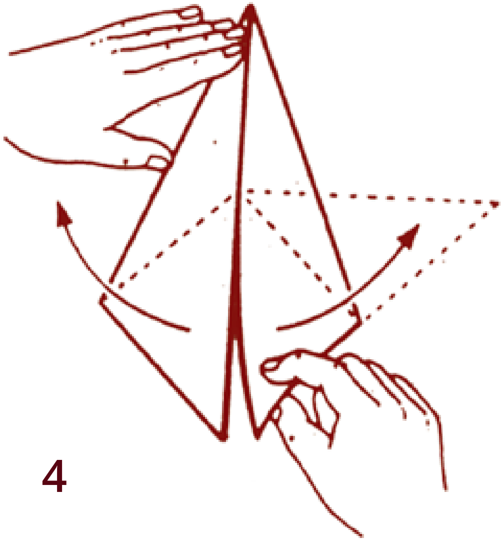

4

अब नीचे के दोनों हिस्सों को बिन्दुओं वाली लाइन तक मोड़ो (चित्र 4)।

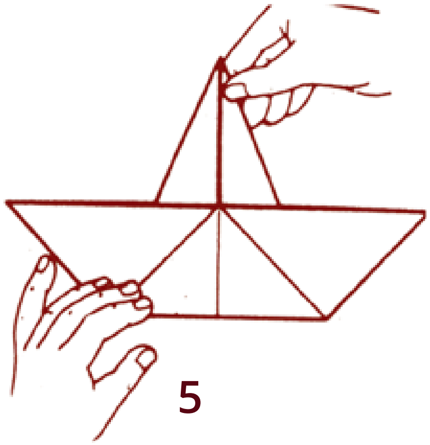

5

इस समय तुम्हारा मॉडल चित्र 5 जैसा दिखेगा।

6

अब ऊपर के भाग में से अन्दर की तह को खींचकर बाहर निकालो (चित्र 6)।

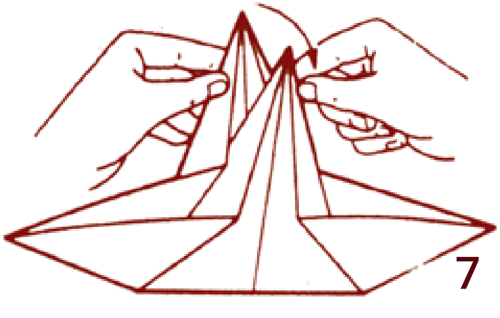

7

अन्दर की तह को तब तक खींचो (चित्र 7) जब तक दोनों तहें एक-दूसरे पर न बैठ जाएँ।

8

अब ऊपरी नोक को नीचे तक मोड़कर एक बर्फी जैसी बनाओ (चित्र 8)।

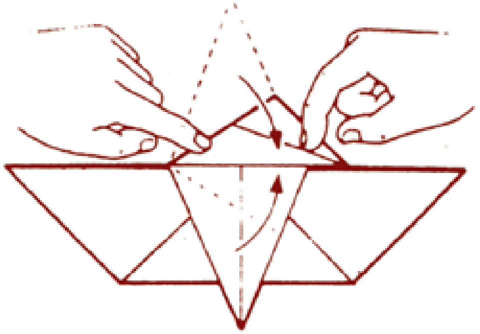

9

ऊपर और नीचे के तिकोनों को आधे में तिरछा मोड़ो (चित्र 9)।

10

तुम्हारा कागज़ चित्र 10 जैसा दिखेगा।

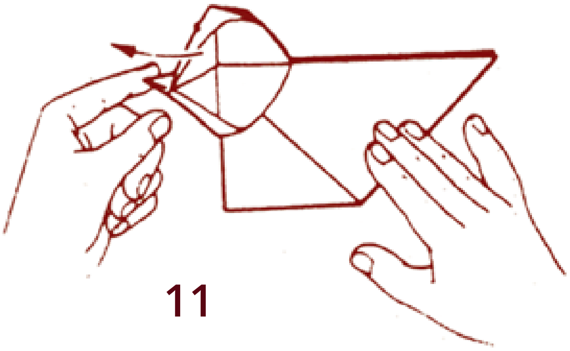

11

कागज़ को अब पलट दो जिससे निचला हिस्सा ऊपर आ जाए। मॉडल को अब बाएँ से दाएँ तक मिलाकर आधे में मोड़ो (चित्र 11)।

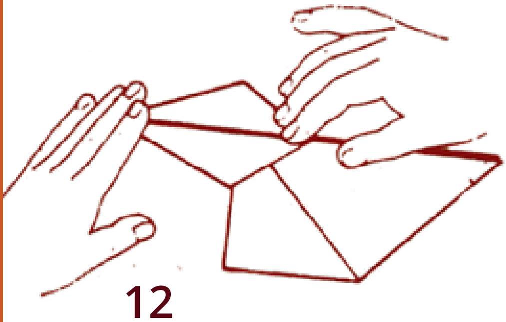

12

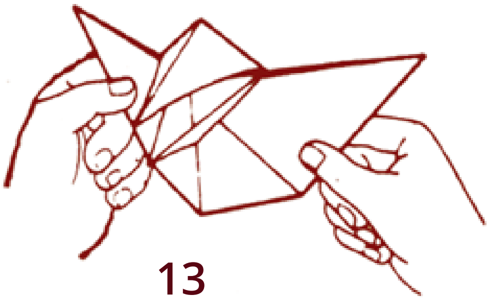

13

दोनों निकले हुए सिरों को बाईं ओर खींचो (चित्र 12)।
और दबाकर कौए की चोंच बनाओ (चित्र 13)।

14

कौए के पंख खोलने और बन्द करने से वह बात करेगा (चित्र 14)।

कौआ अपनी चोंच से कागज़, सुतली और अन्य हलकी चीज़ें भी उठा सकता है।

एक यात्रा उत्तरी ध्रुव की ओर ... 3

चौदह टापुओं पर एक राजधानी!

चित्रा विश्वनाथन

चित्र- 1 खण्डहर

पिछले अंक में मैंने बताया था कि हम पन्द्रह सैलानी डेनमार्क के बन्दरगाह फ्रेड्रिकशान से एक जहाज़ पर सवार होकर स्वीडेन के लिए निकले। एक छोटा-सा समुद्र था कैट्टेगैट जिस पर लगभग साढ़े तीन घण्टे का सफर था। जहाज़ काफी बड़ा था और उसमें रेस्तरां, गेम खेलने के कमरे, बैठकर बतियाने के कमरे वगैरह थे। बाहर बहुत ठण्ड थी और ऊपर से समुद्री हवा भी चल रही थी। लेकिन मैं ज़्यादातर समय बाहर ऊपर खड़ी समुद्र को ताक रही थी क्योंकि किसी ने कहा था कि यहाँ व्हेल दिख जाती हैं। लेकिन मुझे समुद्री पक्षियों के सिवाय कुछ न दिखा। हम देर शाम गोटेबोर्ग पहुँचे और अगले दिन सुबह हम स्वीडेन की राजधानी स्टॉकहोम के लिए निकले। हमारी बस हमारे साथ सही-सलामत जहाज़ पर आ गई थी – सो हम उसी में सवार होकर चार सौ सत्तर किलोमीटर दूर स्थित स्टॉकहोम की ओर चल दिए।

रास्ते में हमें एक पुराने किले का खण्डहर मिला जिससे एक विशाल झील दिखी। झील का नाम था वैट्टर्न। कहते हैं कि इसका पानी इतना साफ है कि इसे यूँही पिया जा सकता है – आसपास के गाँव व शहरों के गन्दे पानी को इसमें बहने नहीं दिया जाता है। इसे दुनिया का सबसे बड़ा पीने लायक पानी का भण्डार माना जाता है।

मगर हमें ज़्यादा मज़ा यह बात जानकर आया कि इस खण्डहर के पास एक मिठाई की दुकान है जहाँ कई तरह की, रंग-बिरंगी मिठाइयाँ बिक रहीं हैं। हमने सोचा कि फिर कभी ऐसा मौका शायद ही मिले, इसलिए हमने खूब सारी मिठाइयाँ खरीदकर रख लीं।

चित्र- 2 खेतों में घास के गट्ठर

चित्र- 3 भारतीय रेस्तरां

रास्ते में लगातार खेत और छोटे गाँव दिख रहे थे। बहुत छोटे मगर बेहद सुन्दर गाँव। इन गाँवों में हमें जगह-जगह नीले या सफेद रंग के गोल गट्ठर दिखे। हम सोचते रहे कि ये क्या हैं। एक जगह हमने देखा कि एक आदमी सूखी घास काटकर उनका पूला बनाकर सफेद प्लास्टिक शीटों में बाँध रहा था। तब जाकर समझ में आया... ठण्ड के दिनों में जब खेत और जंगल बर्फ से ढक जाते हैं तब चारे के लिए सूखी घास का उपयोग होता है। घास काटकर गट्ठर बनाना आजकल ज़्यादातर मशीनों से होता है। स्वीडन में खेती कम और पशुपालन ज़्यादा होता है।

हम शाम को स्टॉकहोम शहर पहुँचे जो मेलारेन तालाब के मुहाने पर चौदह टापुओं पर बसा है। वहाँ पहुँचकर हमने तय किया कि कोई भारतीय रेस्तरां खोजकर वहाँ रात का भोजन करेंगे। काफी चलने पर हमें एक भारतीय रेस्तरां मिला जिसके मालिक एक बांग्लादेशी थे। उन्होंने हमें बहुत प्यार से दाल-चावल और रोटी-सब्ज़ी खिलाई। पिज़्ज़ा और बर्गर खा-खाकर थक चुकीं हमारी जीभों को देसी स्वाद का आनन्द मिला।

अगले दिन सुबह हमारे टूर मैनेजर हमें स्टॉकहोम शहर दिखाने ले गए। एक संपन्न देश की राजधानी होने के बावजूद स्टॉकहोम में बहुमंजिली इमारतें नहीं दिखती हैं। हमें बहुत सारी पुरानी इमारतें दिखीं। सबसे पहले हमें सिटी हॉल ले जाया गया। यह इमारत अन्दर से और बाहर से बहुत ही सुन्दर है, और इसका महत्व भी निराला है। इसका बेशुमार नीला और सुनहरा हॉल विश्व प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार से सम्बन्धित है। नीला हॉल बहुत ही खूबसूरत है। इसी हॉल में हर साल दस दिसम्बर को नोबेल पुरस्कार दिए जाने के बाद बारह सौ से अधिक मेहमानों के लिए रात्रि भोज आयोजित होता है। वैसे यह हॉल नीला नहीं है। इसका निर्माण करने वाले कलाकार ने पहले सोचा था कि इसकी दीवारों को नीली चिप्पियों से ढँकना है, बाद में यह विचार छोड़ दिया गया मगर नाम वही रह गया। भोज के बाद ऊपर के सुनहरे कमरे में ऑर्केस्ट्रा की धुनों पर मेहमान नाचते हैं। इस कमरे की पूरी दीवारों पर ज़मीन से लेकर छत तक सुनहरी चिप्पियों से चित्रकारी की गई है जो देखने लायक है। एक दीवार पर मेलारेन झील की रानी का चित्र है जिसे पूर्वी यूरोपीय शैली में बनाया गया है।

चित्र- 4 सिटी हॉल

चित्र- 5 स्टॉकहोम सिटी हॉल का नीला हॉल

चित्र- 6 सुनहरा हॉल की दीवार पर मेलारेन झील की रानी

स्वीडेन एक अत्याधुनिक देश होने के बावजूद अपनी ऐतिहासिक धरोहरों को बचाए रखने में बहुत आगे है। स्टॉकहोम की गमला स्टैन बस्ती को मध्य काल में वह जिस तरह थी उसी तरह बचाकर रखा गया है। सिटी हॉल से हम शहर के उस पुराने हिस्से को देखने गए। यहाँ की सड़कें बहुत संकरी और पत्थर की बनीं हैं। ज़्यादातर हिस्सों में मोटर गाड़ी का जाना प्रतिबन्धित है। हमने देखा कि इमारतें अलग-अलग रंगों में हैं। पता चला कि हर शताब्दी की इमारत ऐसे अलग रंग में हैं जो उन दिनों उपयोग किए जाते थे। सड़कों पर कई सारी छोटी दुकानें व रेस्तरां हैं जो सैलानियों को आकर्षित करते हैं। हम टहलते हुए समुद्र के किनारे गए और वहाँ के समुद्री पक्षियों को देखते रहे। एक सीगल तो इस तरह बैठा रहा मानो वह एक मूर्ति हो। हम पास जाकर उसकी तस्वीर खींच रहे थे और वह मज़े से देख रहा था। चक मक

चित्र- 7 समुद्र तट पर सीगल

एल्फ्रेड नोबेल – बारूद, तोप और पुरस्कार

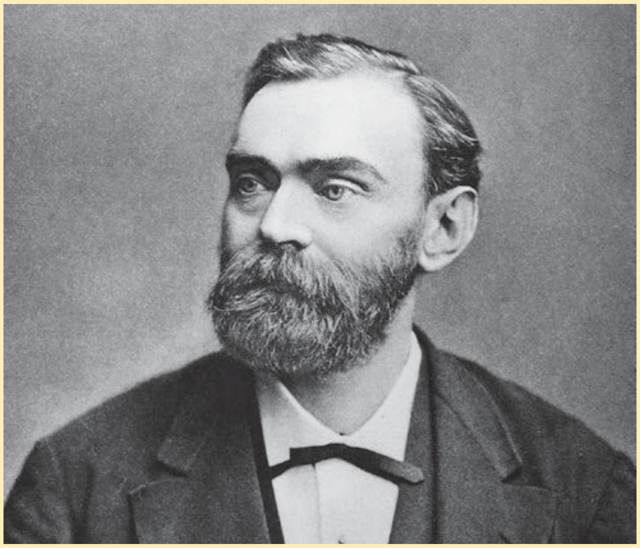

बहुत कम लोग हैं जिन्हें यह जानने का मौका मिलता है कि उनके मरने के बाद लोग उनके बारे में क्या कहते हैं। इनमें से एक थे एल्फ्रेड नोबेल। किसी गलतफहमी के कारण पैरिस के अखबारों में उनकी मृत्यु की खबर यूँ छपी "मौत के सौदागर का निधन! डॉक्टर एल्फ्रेड नोबेल, जो लोगों को मरवाने के तरीके खोजने के कारण अमीर हुए, का कल निधन हो गया।" नोबेल तो बेचारे जीवित थे जब उन्होंने इस खबर को पढ़ा तो बहुत दुखी हुए कि दुनिया उन्हें इस तरह याद करेगी। वे सोचने लगे कि वे जीवन के बाकी दिनों में ऐसा क्या करें कि दुनिया उन्हें कुछ बेहतर कारणों के लिए याद करे।

नोबेल विस्फोटक डायनामाइट के आविष्कारक और घातक बन्दूक और तोपें बनाने वाली बोफोर्स कम्पनी के मालिक भी थे। इसलिए पैरिस के अखबार अपनी तरह से ठीक ही कह रहे थे। नोबेल ने अन्त में अपनी सारी जायदाद हर साल पाँच पुरस्कार देने के लिए स्वीडेन की विज्ञान अकादमी को दे दी। तीन पुरस्कार तो भौतिकी, रसायन और चिकित्सा के लिए थे, चौथा साहित्य के लिए और पाँचवा विश्व शान्ति के प्रयास के लिए दिया जाना था। ये पुरस्कार विश्व के किसी भी देश के व्यक्ति को दिए जा सकते थे। ये पुरस्कार नोबेल के मरने का बाद सन् 1901 से दिए जाने लगे। इससे कुछ हद तक नोबेल की मंशा पूरी हुई क्योंकि आज नोबेल नाम से हम तोपों और बम को याद न करके इन पुरस्कारों को याद करते हैं।

पंखवाली झोंपड़ी

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र: हबीब अली

बच्चों के मन के अनुसार रात, सुबह होने की जल्दी में थी। इसके बाद भी रात, रातभर रही। बच्चे कब सोए होंगे यह उनको पता नहीं था। पर जब वे उठे तो सबको लगा था कि उठने में देर हो गई।

बोलू और कूना सबसे पहले भैरा को बुलाने बजरंग होटल की तरफ गए। बजरंग होटल के सामने की भट्टी सुलग चुकी थी। होटल में कोई ग्राहक नहीं था। बरामदे की लकड़ी की बैंच खाली थी। भैरा दिख जाता तो अच्छा था। वे बजरंग महराज को दिखना नहीं चाहते थे। कूना की नज़र होटल के पिछवाड़े बौने पहाड़ की तरफ गई। भैरा पहाड़ पर चढ़ने के लिए तराई पर खड़ा था। बजरंग होटल का पिछवाड़ा बौने पहाड़ से सटा हुआ था। बजरंग महराज बरामदे पर नज़र रखने के लिए दरवाज़े के पास तखत पर अधलेटे थे।

बजरंग महराज जब होते भी नहीं थे तो उनकी गैरहाज़िरी में कोई कुछ गड़बड़ करने की सोचे भी तो अन्दर से बजरंग महराज के खाँसने की आवाज़ आ जाती थी। और बजरंग महराज जब कहीं दूर जाते तब वे अपने खाँसने की आवाज़ को जैसे होटल में छोड़कर जाते थे। वे नहीं खाँसते तो दूसरा कोई भी खाँस देता। कोई दूसरा न भी खाँसे तो कई बार जो गड़बड़ करने की सोचता, उसे खाँसी आ जाती। या बैठा हुआ ग्राहक खाँस देता। बजरंग महराज के यहाँ जो भी काम करता बजरंग महराज उसके पीछे आजकल खाँसी को लगा देते थे।

भैरा यद्यपि बजरंग महराज की अनदेखी में होटल से बाहर निकल आया था। और बजरंग महराज की खाँसी उसके साथ-साथ थी। भैरा को खाँसी आती पर भैरा उसे अनसुना कर देता। अनसुना करने से वह अपना बचाव कर लेता था। यह भी कहा जाता है कि बजरंग महराज से बिना पूछे मरनेवाले की मृत्यु किसी की भी खाँसी से भाग जाती थी। वैसे भी इस तरफ सबकी उम्र लम्बी होती थी।

पहाड़ चढ़ते हुए भैरा ने दो बार खाँसा। खाँसी को अनसुना कर वह गोल पत्थर की दिशा की तरफ बढ़ रहा था।

कूना ऊँचे पत्थर पर खड़े होकर चिल्लाई, “भैरा रुक जाओ।”

भैरा ने इसे मुश्किल से अनसुना किया। और पहाड़ पर चढ़ना जारी रखा।

कूना फिर चिल्लाई, "भैरा रुक जाओ।" कूना की इस आवाज़ में भैरा के लिए गुस्सा था। इस आवाज़ में यह भी था कि हमने तुम्हें इस तरह चोरी से जाते हुए देख लिया है। मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी।

भैरा, कूना के दूसरी बार के पुकारने को अनसुना नहीं कर पाया था। वह पत्थर की मूर्ति की तरह रुक गया था। भैरा जहाँ था वहाँ मूर्ति की तरह खड़ा रहा।

कूना की आवाज़ सुनकर कूना के पास दूसरे मित्र भी आ गए थे। यह छोटी-सी जगह थी। बच्चे कल के काम को पूरा करने के लिए इकट्ठा हो रहे थे, एक-दूसरे के साथ को ढूँढ रहे थे। और कूना की आवाज़ से सब जल्दी मिल गए।

बोलू ने कहा, "भैरा बहुत देर से खड़ा हम लोगों का इन्तज़ार कर रहा है।"

सब भैरा की तरफ बढ़ने लगे। भैरा के पास आकर सबने कहा, "भैरा चलो!" और आगे बढ़ गए।

पर भैरा यथावत मूर्ति सदृश्य खड़ा ही रहा। वह पलक भी नहीं झपक रहा था। असल में बाकी सबने कहा था कि भैरा चलो। पर उसमें कूना की आवाज़ नहीं थी। भैरा के इस मूर्ति की मुक्ति में कूना की आवाज़ की ज़रूरत थी।

तब कूना ने कहा, "भैरा चलो।" और भैरा साथ चलने लगा।

कूना एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर उछलती-कूदती एक गेंद की तरह टप्पा खाते बढ़ रही थी। वह सबसे आगे थी। और ऊपर भी। कई बार ऊपर चढ़ने पर हाथों का सहारा लेना पड़ता था। कल जो पानी गिरा था, उसके निशान बहुत थोड़े थे। जिनको मालूम था कि कल पानी गिरा था, वे ही इसे पहचान सकते थे।

अब वे पानी के मोटे बहाव के सूखे रास्ते पर चल रहे थे। वे गोल पत्थर के समीप आ गए थे। बोलू और कूना गोल पत्थर के ऊपर चढ़कर दूसरी तरफ जाने लगे। दोनों छिपकली की तरह पर धीरे-धीरे गोल पत्थर पर चढ़ गए। एक-दूसरे का ध्यान रखना इनके पास ज़ंजीर की तरह का मज़बूत सहारा था। भैरा बोलू की तरह नहीं चढ़ पा रहा था पर सब उसकी सहायता कर रहे थे और सब एक साथ गोल पत्थर के ऊपर थे। तब भी ऊपर पत्थर की गोलाई में जगह थी। इतनी बड़ी चट्टान जो थी।

बोलू खिसकते हुए दूसरी तरफ गोल पत्थर से उतरने लगा। वह गोल पत्थर से चिपका हुआ धीरे-धीरे खिसकते हुए उतर रहा था। वह चुपचाप था। उसका न बोलना उसे रोकता था और इस रोकने के कारण वह गोल पत्थर से चिपका हुआ रुक जाता था। पर वह गुरुत्वाकर्षण से अपने वज़न को रोकता हुआ उतर रहा था। बोलू ने नीचे आने के बाद सबको नीचे आने में सहायता की। अब वे सब पत्थर के रास्ते के मुहाने के आसपास उस तहखाने जैसी जगह को देख रहे थे कि पत्थर की चौखट पर रखा गोल पत्थर दिख जाए!

कूना ने कहा, "चौखट पर रखा पत्थर मुझे नहीं दिख रहा है।"

देखू ने कहा, "मुझे दिख गया।"

देखू ने उँगली के इशारे से बताया, "यहाँ है।"

सब देखू के आजू-बाजू उचककर नीचे झाँकते बैठ गए।

बोलू ने सबको चेताया, "गिर मत जाना।"

देखू ने कहा, "नीचे कैसे उतरेंगे?"

कूना ने कहा, "रस्सीवाला तरीका ठीक है। पन्द्रह मिनट लम्बी रस्सी से काम चल जाएगा।"

बोलू ने कहा, "कोई रस्सी काटकर देना नहीं चाहता। एक दिन, दो दिन की लम्बी रस्सी मिल सकती है।"

"पक्षी के पंख से बनी छतरी से क्या काम निकल सकता है?" देखू ने कहा।

"कैसे?" बोलू ने पूछा।

"मेरे घर में वह छतरी है," देखू ने कहा।

देखू का कहना जारी था, "एक दिन की बात है। मैं पेड़ पर चढ़ा था। जब भी मैं पेड़ पर चढ़ता, बैठी चिड़िया दूसरे पेड़ों पर चली जाती थी। मैंने देखा तो मुझे लगा मैं भी ऐसा कर सकूँ तो कितना अच्छा होगा। कम ऊँचाई की डाल पर बैठकर पास के दूसरे पेड़ की फैली बाँह

जैसी शाखा की तरफ मैं कूदता। मैं डाल को पकड़ नहीं पाता था। जो डाल मुझे पास दिखती थी, उसे भी पकड़ नहीं पाता था। मैं गिर पड़ता। कम ऊँचाई से नीचे गिरो तब भी चोट लगती है। एक दिन मैं पेड़ के नीचे गिरा पड़ा रो रहा था। एक लड़का जो मुझसे छोटा था जंगल से निकल रहा था। उसने पूछा कि क्यों रो रहे हो? मैंने उसे बताया कि मैं क्यों गिरा। उसने कहा कि रस्सी बाँधकर झूलते हुए पास के पेड़ पर चले जाते। मैंने कहा, 'मैं बन्दर की तरह नहीं, चिड़ियों की तरह उड़कर दूसरे पेड़ पर जाना चाहता हूँ।' उस लड़के ने कहा, 'अच्छा रुक जाओ।' वह फिर जंगल के अन्दर गया। थोड़ी देर बाद वह लौटा तो उसके पास एक छतरी थी। छतरी पक्षियों के पंख से बनी थी। उसने वह छतरी मुझे दी और कहा, 'इस छतरी के सहारे तुम एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक आसानी से जा सकोगे। ज़्यादा दूर नहीं जा सकोगे। मान लो गिर गए तो धीरे-से गिरोगे। बल्कि नीचे उतर आओगे। सम्भलकर उतरने का तुमको अभ्यास हो जाएगा।' छतरी देकर वह चला गया। छतरी तानकर मैं एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ने के खेल में भूल गया कि उसे किस तरह से बुलाया जा सकता है। उसने मुझे समझाया था कि उसे बुलाने के लिए कोयल की तरह कूकना। उसने मुझे पाँच बार या चार बार जल्दी-जल्दी कूकने के लिए कहा था। पर कितनी जल्दी? मैं भूल गया कि जल्दी कूकने के बाद फिर इतनी गिनती गिनने के बाद एक बार कूकने की आवाज़ देना। एक बात बताऊँ, उसके हाथ में चिड़ियों के पंख थे। मैंने सोचा बहेलिया होगा। पर, वह बहेलिया नहीं था। जंगल में चिड़ियों के गिरे हुए पंख वह इकट्ठा करता। उसके घर में चिड़ियों के पंख सजे रहते। उसका घर दिखने में एक बड़ा पक्षी लगता है। घर में उसकी माँ और केवल वह रहता है। तेज़ हवा चलती है तो उसकी झोंपड़ी के पंख मयूर के पंख जैसे फैल जाते हैं। जैसे झोंपड़ी नृत्य कर रही है। उसकी झोंपड़ी को नाचते हुए देखना अच्छा लगता है। यह सब उस लड़के ने मुझसे कहा था। मैं उसकी झोंपड़ी नहीं गया। उसकी झोंपड़ी बहुत कठिन जगह में बनी है। उसकी झोंपड़ी के चारों तरफ घना जंगल है। पर उसकी झोंपड़ी के ऊपर खुला हुआ आकाश है। पंखवाली झोंपड़ी को तेज़ हवा में आकाश की तरफ उड़ने की जगह चाहिए। इस तरह झोंपड़ी बनी है। वह जो पंख बीनता है वह नोचे हुए नहीं होते, गिरे हुए पंख हैं। उत्सवों के दिन रंग-बिरंगी चिड़ियाँ उसकी झोंपड़ी के पास सुन्दर पंखों को गिराकर चली जाती हैं। जैसे देकर जाती हैं। वे पंखों से झोंपड़ी को सजाते हैं। पंखों के रंग को देखकर पेड़ भी अपने रंगों और फूलों से सज जाते हैं। आकाश भी रंगीन हो जाता है। उस पर रंगीन चिड़ियाँ तरह-तरह से उड़ान भरती हैं। चिड़ियाँ झुण्ड में अपने उड़ने की कलाबाज़ी दिखाती हैं। अब बताओ क्या मैं घर से छतरी लेकर आ जाऊँ?” कूना ने कहा, “देखू, क्या ऐसा नहीं हो सकता तुम यहाँ से छतरी को बुलाओ और छतरी आ जाए?”

देखू ने कहा, “ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा होता तो छतरीवाला लड़का छतरी लेने जंगल के अन्दर अपने घर क्यों जाता?”

बोलू ने पूछा, “देखू तुम कितनी देर में लौटकर आ सकते हो?”

देखू ने कहा, “मैं अपनी दृष्टि की दूरी तक कदम नहीं बढ़ा सकता। आकाश की तरफ देखकर मैं चल नहीं सकता। सामने बहुत-सी आड़ हैं जो मेरी दृष्टि को बाधित करती हैं। फिर भी अगर कोई दूसरा दो घण्टे में जाकर लौट सकता है तो मैं पन्द्रह मिनट में आ सकता हूँ।”

वह चला गया।

देखू अभी तक लौटकर नहीं आया था। उन्हें लग रहा था कि बहुत समय हो गया। वे तरह-तरह की बातें कर रहे थे। सब में धैर्य की कमी थी। प्रतीक्षा करना, खाली बैठने जैसा था। खाली बैठना किसी को अच्छा नहीं लगता था। वे बात करते-करते सो गए। सोने की शुरुआत भैरा ने की थी। रात की नींद नहीं हुई थी।

देखू आया। जैसे एक दिन बाद आया। दिन में सोकर जब भी उठो तो वही दिन दूसरा दिन लगता था। रात में नींद खुलना, उसी अँधेरे में, उसी रात में नींद खुलना लगता था। चाहे दूसरे दिन की रात हो।

देखू के छाते की तरफ सबका ध्यान था। अभी बन्द डैने की तरह छत्ता था। देखू ने उसे खोला तो एक बड़ी छतरी खुल गई। छतरी की ऊँचाई कम थी।

देखू ने रौब झाड़ते हुए कहा, “अब यह छतरी खुल गई है। जब यह पंख खोल देता है तब इसके साथ उड़ना ही पड़ता है। जब तक इसके साथ न उड़ो इस छतरी को बन्द नहीं कर सकते।”

बोलू ने कहा, “मैं तो तैयार बैठा हूँ।”

कूना ने ज़िद की, “पहले मैं।”

देखू से बोलू ने पूछा, “क्या दोनों एक साथ जा सकते हैं?”

देखू ने कहा, “कह नहीं सकता। शायद तेज़ी-से नीचे उतरें।”

बोलू ने उतरने के लिए नीचे का मुआयना किया।

भैरा ने परेशानी से पूछा, “नीचे उतर तो जाओगे। फिर ऊपर कैसे आओगे?”

बोलू ने कहा, “कल रात का पानी इस नीचे के तराशे कमरे में एक बूँद भी नहीं बचा है।”

सुबोध ने कहा, “बूँद टपकने की आवाज़ तो आ रही है।”

“हाँ, आ रही है। कल के पानी बरसने के पहले से बूँद के टपकने की आवाज़ आ रही है। पानी जहाँ से निकलता होगा वहाँ से हम भी निकल जाएँगे।” बोलू ने कहा।

देखू ने कहा, “मैं दृष्टि दौड़ाकर देखता हूँ, शायद मुझे पानी निकलने का रास्ता दिख जाए!”

कूना ने कहा, “वो तो मैं नीचे उतरकर देख लूँगी।”

अभी तक यह तय नहीं हुआ था कि कौन जाएगा, कूना या बोलू। देखू ने दृष्टि दौड़ाकर देखा कि पानी के बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

तनी हुई छतरी को हाथ में लेकर बोलू तैयार हो गया था। कूना चुपके से उसके पास आकर खड़ी हो गई थी। वह भी छतरी को पकड़कर तैयार हो गई। अब बोलू, कूना के साथ तैयार था। देखू को लग रहा था दोनों के सम्मलित वज़न के कारण वे धीरे नहीं उतर पाएँगे। देखू कुछ कहे उसके पहले बोलू कूदा। छत्ता बहुत बड़ा था। जिधर से पानी की निकासी होगी शायद उसी तरफ से बहुत तेज़ हवा आ रही थी। या, बाहर की हवा नीचे इकट्ठा होकर ऊपर की ओर लौटती थी। छत्ता कुछ ठहर-सा गया था। नीचे से ऊपर आती हवा उसे उतरने नहीं दे रही थी। अगर बोलू अकेला होता तो वह हवा में अटका होता। अच्छा हुआ कूना थी। नीचे की हवा जब कम हुई तो हवाई छतरी धीरे-धीरे उतरने लगी। वे कुछ नीचे आते तब भी धरातल कुछ दूर बचा हुआ होता। यह काफी देर से हो रहा था। ऊपर से तो नीचे की ज़मीन पास लग रही थी। पर पास नहीं थी। वे उतरते जाते तो नीचे का धरातल भी नीचे उतरता जाता। देखू भी धरातल को ठीक से समझ नहीं पाया। दरअसल धरातल को उन्होंने जितना समीप समझा था उससे धरातल दूर था।

वे धरातल पर नंगे पैर उतरे थे। वे सम्भलकर अपने नन्हे पैर रख रहे थे। उनका लक्ष्य चौखट जैसे पत्थर पर था। वे बीच-बीच में उस पर रखे छोटे पत्थर को भी देख लेते थे।

जारी...

मछली पकाड़िया केकड़ा पकाड़िया

अनूप दत्ता
चित्र: हीरा धुर्वे

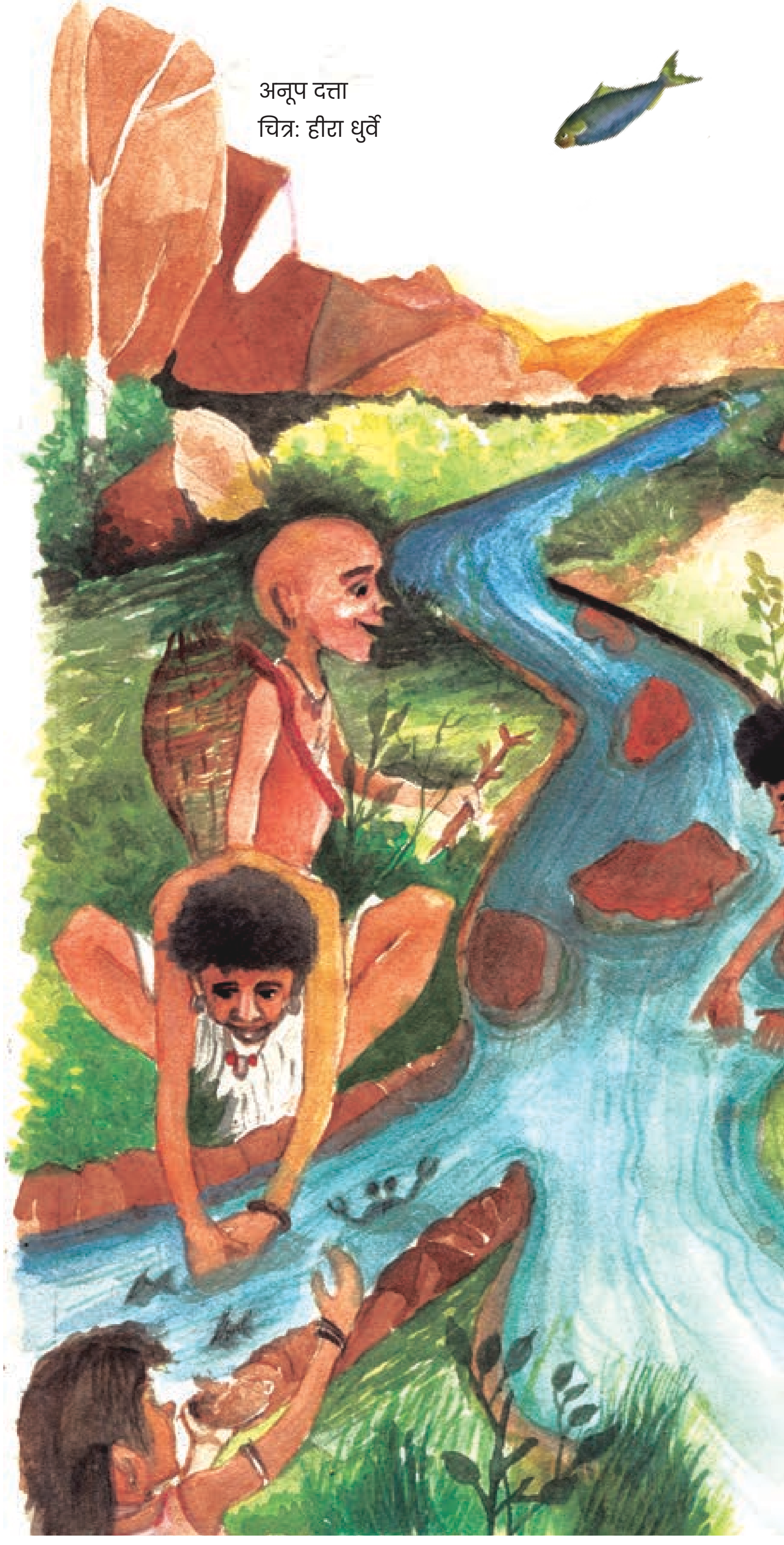

हमारे कई खेल हैं। हॉकी या फुटबॉल की तरह कुछ खेलों के नियम पक्के होते हैं और लगभग सभी इन्हें नियम बदले बिना खेलते हैं। कई ऐसे खेल हैं जिन्हें हम खुद गढ़ते हैं। इनके नियम हमारी मनमानी से बनते हैं। और खेल-खेल में हम अकसर ज़िन्दगी की, अपने बड़ों की नकल करते हैं। 'मछली पकाड़िया केकड़ा पकाड़िया' भी ऐसा ही एक अनूठा खेल है। इसे पश्चिमी मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के भील और भिलाला बच्चे खेलते हैं।

इस खेल को बच्चे दो समूहों में बँटकर खेलते हैं। दो से लेकर दस-पन्द्रह बच्चे तक इसे खेल सकते हैं। बस इतना ज़रूरी है कि हर समूह के पास अपनी टूँगली हो (बाँस, पतली छाल और पत्तियों से बनी शंकु आकार वाली एक संकरी टोकरी)। फिर क्या, सब चल पड़ते हैं किसी झरने या नदी के किनारे। बच्चे ऐसी जगह खेलना पसन्द करते हैं जहाँ जंगल से निकलकर कोई झरना पत्थरों के बीच से बहता है। वैसे इसे किसी पोखर के किनारे भी खेला जा सकता है।

झरने पर आकर समूह अपने लिए एक जगह तय कर लेते हैं। ये अकसर पानी के दोनों किनारों पर, एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं। बच्चे ऐसी जगह चुनते हैं जहाँ उनको लगता है कि मछली या केकड़े पकड़ में आएँगे।

खेल की शुरुआत में बच्चे कीचड़, रेत, सूखी पत्तियाँ और घास वगैरह इकट्ठा कर लेते हैं। इन सब को मिलाकर गाढ़ा मसाला बना लेते हैं। फिर झरने के किनारे को हलके से खोदकर नाला बनाया जाता है। उस मसाले से किनारे पर कुछ दूर तक नाले की दीवारें खड़ी कर देते हैं। एक बार नाला बन जाए तो उसका मुँह खोल देते हैं और झरने का पानी उसमें बहने लगता है।

मछली, झींगे, केकड़े नाले में बहकर आ जाते हैं और बच्चे इन्हें पकड़कर अपनी टूँगली में डाल लेते हैं। जिस समूह की दीवार सबसे टिकाऊ होती है और जो सबसे ज़्यादा मछलियाँ व केकड़े पकड़ पाता है, वह खेल जीत जाता है। कम बच्चे हों तो खेल एक-आध घण्टे में खत्म हो जाता है। ज़्यादा बच्चे हों तो यह खेल दिनभर भी चल सकता है।

पानी की धार मोड़ने के लिए मिट्टी की दीवार बच्चे उसी तरह बनाते हैं जिस तरह बड़े खेती या बागवानी के लिए बनाते हैं। इससे सिंचाई की समझ भी बनती है और बहुत मज़ा भी आता है।

मेरा पन्ना

बादल को हुई सर्दी

एक दिन हमने इक बादल से
हौले-से यह पूछ लिया
तुम्हें देख मेंढक ने टर्र-टर्र
बोलो आखिर क्यूँ किया
बादल गरज-गरजकर
अपनी थोड़ी पैंट चढ़ाकर
छोटा-गोल चश्मा लगाया
नाक साफ करके फिर बतलाया
इसीलिए टर्राता मेंढक
मेरी हँसी उड़ाता मेंढक
मुझको हो गई सर्दी है
बारिश मैंने कर दी है

प्रियन्तरा भारती,
छठी, बाल भवन किलकारी
पटना, बिहार

चित्र: श्रेयांश जैन, सातवीं,
जेपीएस स्कूल, रुद्रपुर,
उत्तराखण्ड

मेरा पन्ना

एक यादगार सफर

सानिया सास्ते,
नवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, महाराष्ट्र

चित्र: सलोनी, तीसरी, रूम टू रीड नवी, हिमाचल प्रदेश

मुझे हमेशा से बाहर जाना अच्छा लगता है चाहे वो लम्बी दूरी की यात्रा हो या फिर पैदल चलना। मैं कभी दो दिन के सफर पर बाहर नहीं गई थी। खुशकिस्मती से इस साल मेरी यह इच्छा पूरी हो गई क्योंकि हमारे स्कूल में हर साल नवीं क्लास के बच्चों को दो दिन के लिए बाहर घुमाने ले जाते हैं।

हमने उन जगहों के बारे में सोचना शुरू किया जहाँ हम जाना चाहते थे। कुछ बच्चों ने कोंकण जाने का सोचा। हमने रायगढ़, हरीहरेश्वर और मुरुद जंजीरा जाने का सोचा। यह हमारा दो दिनों के लिए घर के बाहर एक प्राकृतिक वातावरण में एक साथ जाने का पहला अनुभव था वो भी इतने कम खर्चे पर।

हम मिनी बस से गए। सत्रह बच्चे इस सैर पर जाने के लिए राज़ी हुए थे। सुबह जब हम बस के आने का इन्तज़ार कर रहे थे तो हर आती हुई बस को देखकर हमें लगता कि यही हमारी बस है और जब वो बिना रुके चली जाती तो हम उदास हो जाते। फलटण से रायगढ़ का सफर मुश्किल मगर रोमांचक था। सफर के दौरान हमने गाने गाए, जोक सुनाए। कुछ लड़के-लड़कियों ने डाँस भी किया।

लंच करने के बाद हम रोपवे के जरिए रायगढ़ के शीर्ष पर पहुँच गए। हमने अपनी दोपहर वहीं मन्दिरों और महलों में घूमते हुए बिताई। रायगढ़ में बहुत सारी सीढ़ियाँ थीं। जब हम नीचे उतर रहे थे तो हम सब बहुत ही थक गए थे।

शाम होने तक हम श्रीवर्धन लॉज में पहुँच गए थे। हम सभी लोग एक ही कमरे में सोए थे। लेकिन एक बजे तक तो हम जाग ही रहे थे। अगले दिन सुबह-सुबह हम समुद्र के किनारे घूमने गए। हमने वहाँ सूर्योदय का खूबसूरत नज़ारा देखा। हम समुद्र के पानी में खेले भी। लड़कों ने पकड़ा-पकड़ी खेला और लड़कियों ने कबड्डी। हमने रेत पर अपने-अपने नाम भी लिखे। मधुरा, अंकिता और मृणाली पानी में जाने से डर रही थीं। सच बताऊँ तो समुद्र को देखकर पानी में जाने से डर तो मैं भी रही थी। लेकिन जैसे ही मैं पानी में गई मेरा सारा डर छू हो गया। हमें वहाँ बहुत सारी सीप मिलीं। हमने वहाँ सच में बहुत मज़े किए।

जब हम जंजीरा पहुँचे तो हमें कहीं भी किला दिखाई नहीं दिया। थोड़ी देर बाद पता चला कि किला तो समुद के बीचोंबीच है। हम एक नाव के ज़रिए वहाँ गए। हर कोई जंजीरा देखने को उत्सुक था। अचानक अंकिता को पानी में कुछ दिखाई दिया। वो ज़ोर से चिल्लाई, वो देखो मगरमच्छ! कुछ लड़कियों ने ध्यान से देखा तो पता चला कि वो लकड़ी का एक लट्ठा था। यह बड़ा ही डरावना अनुभव था।

यह दो दिन इतने मज़े से निकले कि क्या बताऊँ। आसपास का माहौल इतना शान्त और सुन्दर था। प्रकृति जैसे अपनी सुन्दरता के चरम पर थी। मौसम भी बहुत ही सुहाना था। टाइम इतनी जल्दी निकला कि हमें पता ही नहीं चला कि दो दिनों का सफर कब खत्म हो गया। हालाँकि यह सफर हमेशा मेरी यादों में रहेगा।

माथापच्ची

1. बाजू में दरवाज़ों की कई तस्वीरें दी गई हैं जिनमें से एक तस्वीर में कुछ गड़बड़ है। क्या तुम बता सकते हो कि किस तस्वीर में क्या गड़बड़ है?

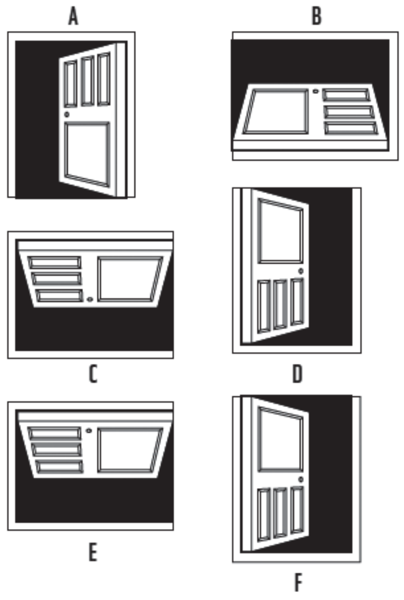

2. सारा की दादी ने उसे बताया कि जब प्रथम विश्वयुद्ध हुआ था तो उनके दादाजी ने उसमें बहुत बहादुरी का काम किया था जिसके लिए उन्हें विश्वयुद्ध खत्म होने के थोड़े ही समय बाद सम्मानित किया गया था। सम्मान के तौर पर उन्हें एक शील्ड मिली थी जिसमें लिखा था 'प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अत्यन्त बहादुरी का प्रदर्शन करने हेतु'। सारा तुरन्त समझ गई कि दादी झूठ बोल रही हैं। सारा को ऐसा क्यों लगा?

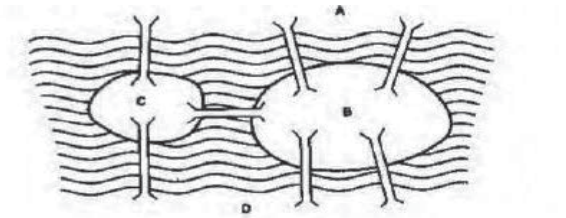

3. एक नदी में दो टापू हैं जो एक पुल के जरिए आपस में जुड़े हैं। यह टापू छह अलग-अलग पुलों के जरिए नदी के किनारे स्थित जगहों से भी जुड़े हैं। तुम्हें इन सातों पुलों से होकर गुज़रना है बस यह ध्यान रखना कि एक पुल पर तुम सिर्फ एक ही बार जा सकते हो। तुम किसी भी पुल से चलना शुरु कर सकते हो। क्या ऐसा करने का कोई तरीका हो सकता है?

4. मायरा के पास 2×8 का बड़ा चॉकलेट बार है जिसे वो 1×1 के टुकड़ों में तोड़ना चाहती है। वह चॉकलेट बार को केवल लम्बाई या चौड़ाई में ही तोड़ना चाहती है। 1×1 के टुकड़े पाने के लिए उसे चॉकलेट को कितनी बार तोड़ना होगा?

5. अर्शी, बेनी, चार्ली, डिम्पी और एलिना सेब खा रहे हैं। अर्शी ने अपना सेब चार्ली के बाद लेकिन बेनी से पहले खा लिया। डिम्पी ने अपना सेब बेनी के बाद लेकिन एलिना के पहले खा लिया। तो बताओ कि किसने सबसे पहले सेब खाया और किसने सबसे आखिरी में?

फटाफट बताओ कि

हरे-भरे से बाग में मोती गिरे अनेक
माली गया बीनने बाकी बचे न एक

(ओस)

एक तालाब रस भरा बेल पड़ी लहराए
फूल खिला बेल पर फूल बेल को खाए

(दीया-बाती)

वह क्या है जो ऊपर-नीचे दोनों ओर जाती है फिर भी एक ही जगह रहती है?

(सीढ़ी)

सुडोकू-8

	1				3
				4	
		5		6	
	4		3		
3			5		1
2					4

सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको छह डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 6 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है करके तो देखो, जवाब अगले अंक में तुमको मिल जाएगा।

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

फेल विद्यार्थी, निराश न हों उनके लिए 9 जून से पुनः परीक्षाएं

'रुक जाना नहीं' योजना

माध्यमिक शिक्षा मंडल, म.प्र. भोपाल से 2018 की परीक्षा में अनुत्तीर्ण विद्यार्थी हेतु

FAIL - First Attempt in Learning - A.P.J. Abdul Kalam

1. प्रस्तावना :

वर्तमान में विद्यार्थी, परीक्षा परिणाम अपेक्षा अनुसार नहीं आने पर हताश हो जाते हैं। मध्यप्रदेश विधानसभा ने भी इस विषय में चिन्ता व्यक्त की थी और सामान्य जनों से भी इस हेतु सुझाव आमंत्रित किये गये थे। उसी अनुक्रम में "**रुक जाना नहीं**" योजना वर्ष 2016 से प्रारम्भ की गई थी, इससे अब तक लगभग 1,16,000 से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर लाभांवित हुए। इसकी सफलता को देखते हुए माध्यमिक शिक्षा मंडल, म.प्र. भोपाल से अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए शासन निर्देशानुसार इसे निरन्तर किया गया है।

2. कौन-कौन विद्यार्थी इस योजना का लाभ उठा सकते हैं :

माध्यमिक शिक्षा मंडल, म.प्र. भोपाल के वर्ष 2017-18 में कक्षा 10वीं एवं 12वीं में अनुत्तीर्ण एवं अनुपस्थित रहे विद्यार्थी।

ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने वर्ष 2016 की रुक जाना नहीं योजना के अंतर्गत कक्षा 10वीं उत्तीर्ण की है परन्तु वे माध्यमिक शिक्षा मंडल से कक्षा 12वीं की परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके हैं, ऐसे विद्यार्थी भी कक्षा 12वीं रुक जाना नहीं योजना जून 2018 में सम्मिलित होकर योजना का लाभ उठा सकते हैं।

3. आवश्यक प्रक्रियाएं :

3.1 योजनांतर्गत पात्र विद्यार्थी 25 मई 2018 तक आवश्यक रूप से एम.पी. ऑनलाइन कियोस्क के माध्यम से अथवा स्वयं, ऑनलाइन निर्धारित शुल्क जमा कर परीक्षा हेतु पंजीयन करवा सकते हैं।

3.2 परीक्षाएं 9 जून 2018 से आयोजित की जाएगी। परीक्षा पूर्व 01 जून से 07 जून 2018 तक विकास खण्ड मुख्यालय के शासकीय उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय पर प्रशिक्षण की व्यवस्था।

3.3 परीक्षा प्रश्न पत्र मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल के पाठ्यक्रम अनुसार ही होंगे तथा केवल अनुत्तीर्ण विषयों की ही परीक्षा देनी होगी। अंकसूची म.प्र. राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा जारी की जाएगी, जिसमें पूर्व में उत्तीर्ण विषयों के प्राप्तांक दर्शित होंगे।

3.4 किसी कारणवश परीक्षार्थी माह जून 2018 की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाते हैं वे शेष अनुत्तीर्ण विषयों की परीक्षा माह दिसम्बर-2018 में दे सकते हैं। इस हेतु उन्हें पुनः अपना पंजीयन एम.पी. ऑनलाइन के माध्यम से करवाना होगा।

3.5 जून 2018 में आयोजित प्रथम चरण की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थी को ही कक्षा 11 में नियमित प्रवेश की पात्रता होगी। द्वितीय चरण में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को कक्षा 11वीं में नियमित प्रवेश नहीं मिलेगा परन्तु वे वर्ष 2020 के जून माह में 'रुक जाना नहीं योजना' अंतर्गत आयोजित कक्षा 12वीं की परीक्षा में सम्मिलित हो सकेंगे।

4. विश्वसनीयता :

डिजिटाइज्ड मूल्यांकन, परीक्षा समाप्ति के एक माह में परीक्षा परिणाम, ई-माइग्रेशन एवं ई-अंकसूची और जिला स्तर पर मार्गदर्शन हेतु राज्य ओपन स्कूल के संपर्क व्यक्ति के रूप में एक डाटा एन्ट्री ऑपरेटर की व्यवस्था।

नोट :
1. परीक्षा के प्रवेश पत्र **www.mpsos.mponline.gov.in** एवं मोबाइल एप **mpsos** से डाउनलोड कर सकेंगे।
2. प्रवेश पत्र पर परीक्षा की समय सारणी आदि की जानकारी अंकित होगी।
3. किसी भी प्रकार की समस्या समाधान हेतु एम.पी. ऑनलाइन की हेल्पलाइन 0755-4019400 पर संपर्क करें।
4. परीक्षा का पाठ्यक्रम एवं ब्लूप्रिंट म.प्र. माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल अनुसार ही होगा।

माध्यमिक शिक्षा मंडल की परीक्षाओं में जो विद्यार्थी किसी कारण से सफल नहीं हो पाये हैं, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। दुनिया में कई महापुरुष ऐसे हैं, जो प्रारंभ में असफल हुए और बाद में उन्होंने महान कार्य किये। आप भी हिम्मत से आगे बढ़िए और '**रुक जाना नहीं**' योजना का लाभ लेकर परीक्षा में सफलता प्राप्त करें। एक अच्छा भविष्य आप सभी का इंतजार कर रहा है।

डॉ. कुँवर विजय शाह
मंत्री, म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा एवं पदेन अध्यक्ष
म.प्र. राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा परिषद, भोपाल

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2018

म.प्र. राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा परिषद, भोपाल

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

जवाब: ग्वाले की पहेली और नारायण पण्डित का हल

ग्वाले का सवाल था: एक गाय हर साल एक बछिया को जन्म देती है। ये बछिये तीन साल की होने पर हर साल एक-एक बछिये को जन्म देती हैं। अगर इनमें से कोई भी नहीं मरे तो 20 साल में कुल कितनी गायें हो जाएँगी?

3	2	7
8	4	0
1	6	5

जादुई चौकोर

उत्तर

काफी समय के बाद ही नारायण पण्डित ग्वाले को उत्तर दे पाए - बीसवें साल उसके पास 1873 गाय व बछिये होंगी। हर साल कितनी गायें व बछिये होंगी तुम इस तालिका में देख सकते हो।

साल	गायें	साल	गायें
1	1	11	60
2	2	12	88
3	3	13	129
4	4	14	189
5	6	15	277
6	9	16	406
7	13	17	595
8	19	18	872
9	28	19	1278
10	41	20	1873

अब तुम सोच रहे होगे कि नारायण पण्डित इस उत्तर तक कैसे पहुँचे और यह उत्तर सही है कि गलत? यह सब जानने के लिए आगे पढ़ो।

सवाल सुनकर नारायण पण्डित ने ग्वाले से कहा था, “अगर बछिये एक साल में ही बच्चे देने लगें तो सवाल आसान होगा - हर साल संख्या दुगनी होती जाएगी। मगर आपकी बछिया तो तीन साल में जनती हैं। तो हिसाब कैसे लगाएँ....”

वे मन में ही हिसाब करने लगे।

पहले साल एक गाय है - 1

दूसरे साल 1 गाय और एक बछिया - 1 + 1 = 2

तीसरे साल 1 गाय और दो बछिये - 1 + 1 + 1 = 3

चौथे साल 1 गाय और तीन बछिये - 1 + 1 + 1 + 1 = 4

पाँचवे साल 1 गाय और तीन बछिये और एक गाय और एक बछिया - 1 + 3 + 1 + 1 = 6

दूसरे साल की बछिया तीन साल बाद यानी पाँचवे साल में वयस्क गाय बन जाती है और खुद बछिये देने लगती है।

छठे साल क्या होगा... गायें तीन हो जाएँगी और बछिये छह (पहली गाय के तीन, दूसरी के दो और तीसरी का एक) - 3 + 3 + 2 + 1 = 9

साल	मूल गाय	मूल गाय के बछिये	बछियों के बछिये	बछियों के बछियों के बछिये	योग
1	1	-	-	-	1
2रा	1	1	-	-	2
3रा	1	2	-	-	3
4था	1	3	-	-	4
5वां	1	4	1	-	6
6वां	1	5	3	-	9
7वां	1	6	6	-	13
8वां	1	7	10	1	19
9वां	1	8	15	4	28
10वां	1	9	21	10	41

अब नारायण जी को लगा कि पहेली सुलझाने में समय लगेगा। वे एक पेड़ की छाँव में बैठ गए और कंकड़ जमाते हुए हिसाब करने लगे। पहली लाइन में मूल गाय है। उसके लिए हर साल एक-एक कंकड़ रखा। दूसरी में हर साल उस मूल गाय द्वारा दिए गए बछियों की संख्या है। यह हर साल एक-एक बढ़ते जाती है। तीसरी लाइन में उनके बछियों की संख्या। चौथी में तीसरी पीढ़ी के बछिये। पाँचवी लाइन में चौथी पीढ़ी के बछिये....।

जब नारायण पण्डित ने योग का क्रम देखा तो एक मज़ेदार बात पाई। यह समझ में आने लगा कि-

चौथे साल की संख्या तीसरे और पहले साल की संख्या का जोड़ है, यानी कि 4 = 3 + 1.

पाँचवे साल की संख्या चौथे और दूसरे साल की संख्या का जोड़ है, यानी कि 6 = 4 + 2.

छठे साल की संख्या – पाँचवे और तीसरे साल का जोड़ है,
9 = 6 + 3 और

दसवें साल की संख्या है नौवें और सातवें साल का जोड़,
41 = 28 + 13.

अगर हम इसे गणितीय भाषा में कहें तो

चौथे साल - C4 = C3 + C1

पाँचवे साल - C5 = C4 + C2

छठे साल - C6 = C5 + C3

दसवें साल - C10 = C9 + C7

जहाँ C1 पहले साल की संख्या है, C2 दूसरे साल की संख्या, C3 तीसरे साल की संख्या....।

इसका क्या मतलब है? इसका यह मतलब है कि छठे साल में जितने जानवर थे वे सब तो सातवें साल में भी रहेंगे। मगर साथ में चौथे साल में जितने जानवर थे (गाय और बछिये भी) तीन साल बाद यानी सातवें साल में उनकी एक-एक बछिया जनेगी।

इसमें एक और मज़ेदार बात है। हम जानते हैं कि C6 खुद C5 + C3 के बराबर है। यानी हम यह भी कह सकते हैं कि:

C7 = C5 + C3 + C4

यानी किसी साल के जानवरों की संख्या उससे पहले एक साल छोड़कर के लगातार पिछले तीन सालों के जानवरों का जोड़ है।

करते-करते नारायण पण्डित बीसवें साल पर पहुँचे:

C20 = C19 +C17

उन्होंने देखा कि कुल जानवरों की संख्या अब 1873 हो गई है। अब उनका सिर चकराने लगा। वे ग्वाले से बोले, “भइया बीसवें साल में आप तो बहुत धनी हो जाएँगे।” ग्वाला बोला, “लेकिन पण्डित जी मैं तो बचपन से गाय चरा रहा हूँ। मगर मैं तो गरीब का गरीब ही रहा। मैं यही सोचते-सोचते गायें चराता हूँ।” नारायण पण्डित को लगा कि यह मामला गणित का नहीं है। सो वे ग्वाले को धन्यवाद देते हुए घर चल दिए।

माथापच्ची जवाब

1. E वाले चित्र में दरवाज़े का नॉब गलत जगह पर है।

2. जिस समय पर वो सम्मान दिया गया था उस समय तक तो द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ ही नहीं था। और कोई यह जानता भी नहीं था कि द्वितीय विश्वयुद्ध होगा। इसलिए सम्मान की शील्ड पर प्रथम विश्वयुद्ध के लिए सम्मान ऐसा नहीं लिखा जा सकता।

3. सातों पुलों से सिर्फ एक बार गुज़रना सम्भव नहीं है। ऐसा करने के लिए किसी भी एक पुल पर दो बार जाना ही होगा।

4. चूँकि चॉकलेट बार का साइज़ 2×8 है तो इसका मतलब है कि 1×1 के कुल 16 टुकड़े होंगे। हर बार जब मायरा चॉकलेट तोड़ेगी तो उसके पास पहले से एक टुकड़ा ज्यादा होगा। इस हिसाब से उसे चॉकलेट को 15 बार तोड़ना होगा।

5. क्रम इस प्रकार होगा
चार्ली, अर्शी, बेनी, डिम्पी और एलिना

सुडोकू-7 का जवाब

6	4	3	1	2	5
1	2	5	3	4	6
2	1	6	5	3	4
3	5	4	2	6	1
4	3	1	6	5	2
5	6	2	4	1	3

चित्र पहेली डिज़ाइन: दिलीप चिंचालकर

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

मेरे घर की छत के कांधे

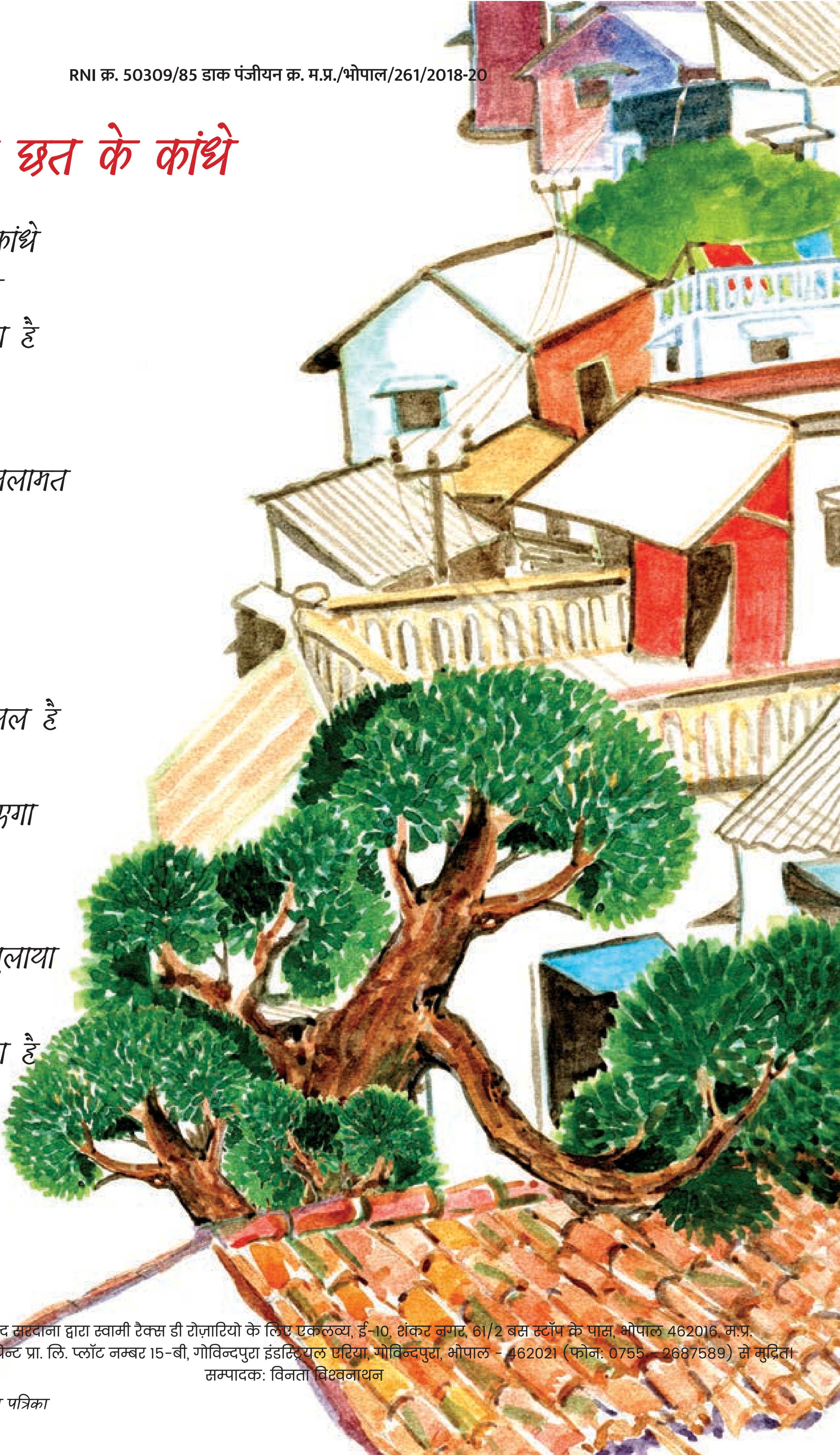

मेरे घर की छत के कांधे
सर रखकर एक आम
चिड़ियों से बातें करता है
रोज़ सुबह से शाम

चिड़ियों के घर रहें सलामत
यूँ शाखें बुनता है
बाबा का हमउमर है
थोड़ा ऊँचा सुनता है

इसी गली में एक पीपल है
उसका गहरा यार
नई सड़क में गुम जाएगा
जो अगले इतवार

खबर सुनी तो मुझे बुलाया
फेरा सर पर हाथ
बोला, पीपल छोड़ रहा है
साठ साल का साथ

सुशील शुक्ल
चित्र: कनक शशि

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन